॥ श्री ॥

महाबल मलयसुंदरीनो रास.

पंडितवर्य

कांतिविजयजी विरचित

ए रास

शब्दानुप्रास सरसरस चमत्कृतियुक्त

अने हितोपदेशमय जाणी

तेने

स्वबुद्ध्यनुसार शुद्ध करीने

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्री मुंबईमध्ये

निर्णयसागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.

संवत् १९५१ ना मार्गशीर्ष शुद्ध ६ चंद्रवासर.

में ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहीयें तादि सुमर्म ॥
॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्या, निर्मलता गुण
हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
॥ ए ॥ अकल पदारथ सोधियें, परमारथथी नाण ॥
निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
निःकारण बंधव समो, जवजल तरण उपाय ॥ ख
लता डुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
अंतर तिमिरने नेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ जरता
दिक नृप नाणथी, जवजल तस्या अगाध ॥ १२ ॥
नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल
यसुंदरी जिम सुख लही, चित्तधरी एक सलोक ॥ १३ ॥
किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख ठाय ॥ तास
चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥
आलश निद्रा परिहरी, ठंमी विकथा मित्र ॥ सुणतां
मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥
॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥
॥ जंबूद्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
द्वीप विचाल के, लवण समुद्रे वींटीउ, लाख जोय
णहो वरतुल जिम थालके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
जरत अछे, खटखंमे हो मंमित सुविशाल ॥ नव नव

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला नोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंमदीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें वस्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल नखां, के दर्पण हो दिसिनां मनुहार ॥ नोगी नमर जीले घणा, पण महके हो कमलोनो सार ॥जं० १३॥ वनवाडी आरामनी, रवि नीली हो अडती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण न णी, कसी नीडयो हो बखतर हव जोर ॥जं०॥१४॥ अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण वंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या, रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल नखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो सरसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० ॥ १७ ॥ हेलें धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संभाल ॥ जं० ॥ १८ ॥ देशावर नृप भेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोडि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोडि ॥ जं० ॥ १९ ॥ कोमल चंपक दल जिसी, पट राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि भंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनकवती अने, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो वे चढते मान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगडी, इंम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल ने हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पाले प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेगो तेह नृपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ छोडी छयलें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जाखुं थयुं, दुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता डायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता डायणि

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउं, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता प्यो घणु, नसुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपक माला पे खीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति हां, सभ्रम चर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उभी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोडी बोली प्रिया, इ णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोडी मंत्रि कहे ॥ एदेशी ॥

॥ करजोडी राणीकहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूछुं हुं उंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवो, खोलो नहीं सदभाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ पइवेग अण उनम्य, नथरो कांइ सने ह [illegible] ॥ प्री० ॥ वरी [illegible] हूं, म[illegible] ल्यो [illegible]

हो ॥ प्री० ॥ [illegible] ॥ [illegible] पा

[illegible] र्थे महारा सिररा [illegible] नी

[illegible] उरथी, कुंण करे [illegible] ॥

कर० ॥ ॥ [illegible] किम सरसे

१२ ॥ यद्यपि नजाजे श्रम थकी, चिंता मोटी कांय हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विद्दचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुणी धरणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा मन नेदन नजा, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री० ॥ करे० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ बीजी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन तेत्रिया, जे लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्वेग नर, बोल्यो तव नूपाल ॥ चिंता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥ जे तें पूछ्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥ शुद्ध स्वनावे सर्वथा, तिण वातें निश्चिंत ॥ २ ॥ ए मुज चिंता ऊपटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल थकी मांमी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ एदेशी ॥

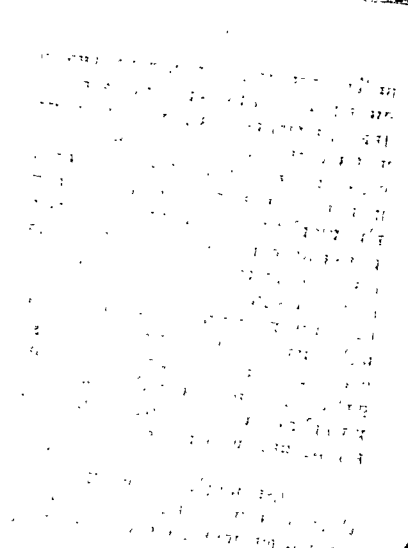
॥ इणपुरमां व्यवहारिया, निवसे छे गुणवंतो रे ॥ लोजनंदी लोनाकरा, घे नाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि . लोन विटंबना, लोने लक्षण जाय रे ॥ लोने पीडा लहे, लोने डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणु, मांहो मांहें भेलो रे ॥ भेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ सोनाकरने सुत थयो, नाम दीउं गुणवम्मा रे ॥ लोजनंदी परण्यो फरी, पण सुत नही पूरव कम्मा रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस वेवा मली, हाटें वे हु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, श्रायो तेय तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जइ प्रकृति उनो रह्यो, तेहने को न पिछाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ बोलाव्यो योग्य पणे, श्रागत स्वागत कीधो रे ॥ श्रादरसुं श्रागत जलो, श्रासण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ किहां रहो, किम श्राव्या इण गामे रे ॥ जात किसी वे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी क्षत्रि श्रछुं, परदेशी श्रसहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां श्रायो रे ॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीउ, नोजन जगत जलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो वेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, श्रंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी गणी, वात जली न ली जाखे रे ॥ धि० ११ ॥ श्रन्य दिवस कहे पं

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जि
ण दिन फरी मागीजे रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ मुखमुद्रा
गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे ॥ ऊंची बांधी तुंब
डी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ वि० ॥ १३ वे
तेणे कह्यो, करजो एहनी संभाल रे ॥ ते कहे हुं जीव
न समो, एहठे तुमचो माल रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ चतुर
विदेशी चूकीउं, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय
कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाप्यो
रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥
तुंबीमांथी रस गली, हेठ बंधार्ये बंद ॥ लोह कोश नीचें
पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु गंमी
ने, हेमहूउं द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो,
मोडयो तिमिर तदंत ॥ ३ ॥ दृष्टिपडयो वो सेठने, सो
वन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउं, जाण्यो रस
नो संग ॥ ४ ॥ अतिलोभें आंधा हूआ, तुंबी ले नि
स्संक ॥ गुपति पणें मूकी ग्रहें, नगण्यो काल कलंक ॥
॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोभें वाह्या छुंम ॥
कुंभवट वहेती मूकीने, कीधो कारज जुंम ॥ ६ ॥ अ



तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं डंजवी, एह जीवन लीयो मुऊ रे ॥ जण विलसीआ नीला सडो, दुःख होसे सही तुऊ रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित मागां काम रे ॥ तो संतति विना नू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण गाम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकारो, ते म हिमा वे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स त्य राखण नणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए वर खोयानुं ग म रे ॥ पढतावो होसे तुम मने, इणवातें खोसो मा म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूगं सम खातां थकां, ना वी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न ही, करतां नूंमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे लोन वसें लहेता नथी, एह वावोवो विष वेलि रे ॥ तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं छुं लज्जा मेलि रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ विंहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ सुद्धि गईछे तुऊ रे ॥ जग वाडि न चोरे चीनडां, दिल नूज विचारि अनूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूगे दोष

शेठ कहे संकट पडया ॥ करुणा करी को जाण, अ मने छोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे नजाण्यो एह, आ पद पडसे आकरी ॥ दुःखनर दाधी देह, प्राण हुआ छे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजें कवण उपाय, मरतांने मा खा दिवें ॥ जो किम तूटयो जाय, तो कांम नकीजें एहवो ॥ ५ ॥ लोक दसें लख कोडि, कै रोवें के कूकु ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥ ॥ ६ ॥ हुउ ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरें, ग्रामांतरथी गेह ॥ आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि ता गितावांधव वेहु, द्वारें थंम्या देखि ॥ लाज्यो मनमांहे घणो, दुःख पाम्यो सविशेष ॥ ९ ॥ कु मर कहे सुणो तातजी, मकरो चिंता कांय ॥ विधि सुं तुम छोडण भणी, करसुं कोडि उपाय ॥ १० ॥ चिंतातुर तव कुमरते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न आवी कांइ तिणें, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ अवला किम उवेखीयें रे ॥ एदेशी ॥

॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नव नव ठाय रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलया रे, मांमे कोडि उपाय रे॥

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रे, मंमन्नको विरचंत ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक मंन ॥ एक कहे शिर मूंमीने रे, करियें तंत्र अर्चन रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल छांटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दें करी रे, कोलाहल हुवें त्यां हिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी ऊखर नूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपचा रे, तिम तिम वाधे पीड ॥ सायर जल वंमा जि हां रे, तिहां वडवानल जोड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ डर्ज न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ कळी गया निज निज थले रे,साथ मनोरथ तास रे ॥ता०॥१६॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे,वळी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणु उद्यम लाग रे ॥ ता०॥१७॥ उपलक्षक सार्थे लीउ रे,तव नर एक सखाय ॥चाल्यो नर सोधण जणी रे, कुमर करी चित्त गाय रे ॥ ता० ॥१८॥ शैव रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥ ढाल कही ए पांचमी रे,कांतिविजय सुख दायरे ॥१९॥

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्युं इश्युं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मां मीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठठी ॥ कपूर होये अतिऊजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए नलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥ राजासूरें शोनतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांनल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंदने विजयचंद, ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंद ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय चंदने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाल्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्ग तात स धारियो रे, मुजमन बेठी चिंत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बां धव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ निमाने हुं नीसखो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दि वस चंडावती रे, पुरी वन मांहे पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीठो नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ स्त्री

रे, आवी मध्य बाजार ॥ सोनाकर सोननंदीने रे, दाट गयो सुविचार ॥ सु० ॥ १८ ॥ वडूपणे येहु थी पडे रे, दगी जीवो सुग मन ॥ दुती मजी तरा पर हुं रहो रे, [illegible] निरादिश ॥ सु० ॥ १९ ॥ ते तुं थी पारण धरी रे, जाणो नाना शास्त्र ॥ केता दिवस [illegible] रे, [illegible] पार ॥ सु० ॥ २० ॥ जनों [illegible] रे [illegible] पारण [illegible] ॥ पहेलो [illegible] रे, [illegible] ॥ सु० ॥ २१ ॥ तुंनी नानी [illegible] रे, [illegible] ॥ सोनप्रगिन के [illegible] रे [illegible] ॥ सु० ॥ २२ ॥ कहीं नराहुं [illegible] रे [illegible] ॥ तुगनो कुडाने गि रे रे, [illegible] प्रतिकार ॥ सु० ॥ २३ ॥ आगो इण दुर [illegible] रे, [illegible] ॥ [illegible] रे, [illegible] ॥ सु० ॥ २४ ॥ [illegible] नानी [illegible] रे, [illegible] ॥ [illegible] रे, [illegible] ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible] करि, [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] नहीं, [illegible] ॥ [illegible]

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप नावीयो ॥ २ ॥ तस सांजलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल श्रावी नमे ॥ केइ चरचे हो चर्के करी पाय के, केशर चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास के, अहनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तुति मांगी खास के, ॥ लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥ आमंत्रे हो केइ जोजन हेत के, पण नावे तेहने घरें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के,पारण काजे नुंहतरे, ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के, आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित नयण के, अंब फल्यो अम बारणे ॥ ६ ॥ ते वेगे हो जिमण जेणी वार के, सुजने इम नृपें कह्यो ॥ जो नावे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुष्प ल ह्यो ॥ ७ ॥ में सुगतें हो वींज्यो करी वाय के, गर्गें आगें बेसकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के प्रसन्न करुं द्विज पसेकें ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप निहाल के, पासंमी चित्तमां चल्यो ॥ पाहंतो हो मुज संगम व्याल के, कामाकुल मन टल चल्यो ॥ ९ ॥ निज थानक हो पोहोंतो दृढ शोग के, शाल वस्यो मन आकरो ॥ संकल्पें हो मलवानो योग के, योग

रें ते मारीउं ॥ वलपुख्यो हो योगिणना तुंव के, नृप काम इस्यो कीयो ॥ १९ ॥ ते रूपनो हो राक्षस अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाडया हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर जाल के, पिंगल लोचन हग नखो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचस्यो ॥ २२ ॥ धस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नृपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा रया हो करता पणु शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती सु जने मही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नइ जावे किहां वही ॥२६॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मंत वीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

नहीयें जामनी ॥२७॥ एमकहि हूं हो
न के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ
ां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें
जी हो अम एहवा हवाल के, जे जा
वे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल
विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

सासो नांखीने, पूछे मम्मे विचार ॥ कि
हने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मम्मे
हवे, सांभल भुजट पुरोग ॥ राज चिंत
ठे, तिणे दाखुंछुं योग ॥ २ ॥ सूतां राह्
घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति
तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निहि
फरसे नवि थाय ॥ जो नर चेद लहे व
शिस उडाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी सुख थ
ती सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा
निरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, भाग्य
वंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में भाखी सहु
कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥
वम्मीने इसी, अरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोडीने रे, सांभल सुगुण सुजाण ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हुई रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिभाग हो सकल दुःख नाग, नयत्राग महारा राज अति काग, याग अ रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजें गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स ज्जन सहेजे परकजूरे, दुखीआं ये आधार ॥ म० ॥ बलिहारी ल्युं जखगमें रे, घडिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सघ ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घडतां करी रे, चतुरा ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजें रे, समरथ सुगुण हुवंत ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासवूं रें, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या जूवे माणसें रे, पणनाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥ तरु तटनी धण धेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कह्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहारों रे, थासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ करपत्त्रिपत पुर देखतो रे, कि म सुख दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शेठ कुमर चिं ते इस्यो रे, करवो करेवो काज ॥ म०॥ पण उपकार कस्या पछी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि कस्यो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥ विनय सहित हवे शेठने रे, बोल्यो विजय कुमार ॥ म० ॥ १० ॥ राक्षसनां पग मरदजो रे, घृतसुं हो साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे, पंचावीस तेणीवार ॥ म० ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व श करी रे, करसुं चिंत्या काम ॥ म० ॥ इम विचारी मेळवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव र्म्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० १३ ॥ रयणी पडी रवि आथम्यो रे, प्रगट्यो घण अंधार ॥ म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रमे तिणिवार ॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ त्रि या बोले हो चतुर हुंडुं नारी, घणुं वासें महाराज घरचारी, अवर नही कोई पास ॥ म० ॥ १६ ॥ अ

वगणतो अन्नट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० कुमर वडुं मिस आवीने रे, मरदे पय निरजंग ॥ म० ॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थंनन मंत्र विशेष ॥ म० ॥ ते पण नरनां गंधथी रे, आवे करी देश ॥ म० १८ ॥ जिमजिम आवे सेजथी रे, राक्स मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे, लोटि पडे गत चेत ॥ म० ॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर विडुने मारवा रे, आव्यो राक्स ताम ॥ म० ॥ २० ॥ थंन्यो अनोपम मंत्रथी रे, सक्तिथइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास थयो करजोडीने रे, नाखें एम वचन्न ॥ म० ॥ २१ ॥ रेरे साहस मंमणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥ मुज महिमा मंत्रे हृस्यो रे, जिम घन दक्षण वात ॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र शक्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो साहिब कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण तें करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल विधवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ मणि माणिक कण कंचणे रे, पूरण नरी घर हाट ॥ म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जलें रे, सुरनित कर स

जीहो निर्नय जल तुंबी जरी,जीहो वेगे मांची संच ॥ जीहो कूई बाहिर काढीउं, जीहो नृपें त्यांथी खंच॥ ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो थती साहसथी रीजीउं, जीहो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट थायो रह्यो जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो अश्वरूप कीधो सुरें,जीहो बे बेग तस पीव ॥ जीहो आव्या पुर चंद्रावती, जीहो थंन्या बेहु दीव ॥ कुम० ॥१५॥जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं,जीहो लोनाकरनो थंस ॥ जीहो जटक तूटी अलगो रह्यो,जीहो पास थकी जिम हंस ॥कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोचनंदी तूटो नहीं, जीहो पाडे सुरत पोकार ॥ जीहो पुत्रविना कोण तेहने, जीहो दुःखथी गोडण हार ॥ कुम०॥१७॥ जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्म ते शेव ॥ जीहो घरमांहि पेसण दीउं, जीहो बीजा शिर रही वेव ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद सुदा जणी, जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवि आदरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जीहो केतेक दिन पूवें नृपें, जीहो निजपुर कीध प्रयाण ॥ जीहो विरहव्यथा दीपडे थयी, जीहो कुमारसुं बांध्या प्राण ॥कुम०॥२०॥ जीहो करी सत्कार अनेक

मा, जीहो तुंमी वीधी काढि, जीहो नृपति वजी पा
मी दीए, जीहो कुमर लीए शिर चाढि ॥कुम०॥२१॥
जीहो मांथा घोटक ऊपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं. जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवर्म्मायें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें नेटण ध
र्यो, जीहो नाख्यो सविवृतांत ॥कुम०॥२३॥ जीहो
प्राण विचारी आगलें, जीहो राखीजें छुं गुज्झ ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्झ ॥ ए आंकणी॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो थायण मोता दोप ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्झने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वाल्युं फरी, जीहो
वाल्युं वैर दुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोच अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शेव सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धर्यो, जीहो जूर्ज सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामिनी,
जीहो धण कंचणनी रासि, जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्यते कृत पुण्यते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

३

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥ २८ ॥ जीहो लोननंदी संकट सह्यो, जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो तो ढावे अविलंब ॥प्री०॥ २९ ॥ जीहो हुं जगमां निरला गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित सरज्यो किस्यो, जीहो वाल्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्धरे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणु, जीहो पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसलता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज जामिनी, जीहो बीजी राव न रीस ॥ प्री०॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे रोवे लुटे, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग धम कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो म

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ सुनग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें पडे, हेलवि या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण ऊंचा मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव नाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पुण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते नणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें छोडियो, रुदय थकी हे कंत ॥ पुत्र देतें आराधशुं,देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पूरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण सुंदरी, मुजमन नावि वात ॥ शुनदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे,वली बोले इश्युं, धर ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विछाय रे, चिंता चमटी, दीसे अंग दयामणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विह्वल थई, घटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराइ पण

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥ २८ ॥ जीहो जोननंदी संकट सह्यो, जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो तो डावे अविलंब ॥प्री०॥ २९ ॥ जीहो हुं जगमां निरना गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित सरज्यो किस्यो, जीहो वाध्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद्धरे धर्म गण ॥ जीहो कुंण धारे कुंज आपणु, जीहो पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसलता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज नामिनी, जीहो बोली राव न रीस ॥ प्री०॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे रोवे लुटे, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो अ

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ भुजग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता थांकें पडे, हेतवि या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण ऊंचा मानियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पुण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते नणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें छोडियो, हृदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं,देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पूरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ए ॥ राय कहे सुण सुंदरी, सुजमन नावि वात ॥ अजदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे,वली बोले इस्युं, धर ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विछाय रे, चिंता चमटी, दीसे अंग दयामणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नावी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराइ पण

उँतरीए ॥ २ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम म
दुरी. कुंण जाणे ते कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ
करि करि सूचवे, मुज मन नरहे धारणेए ॥ ३ ॥
शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं. दुःखदाई मुज
सहीए ॥ अथवा निघुरघात रे. थाशे मुज शिरे,
अजरा पडशे वहीए ॥ ४ ॥ के जागे सर्वीन रे, ज
यन माहरो.कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे
ज गोग रे, शोक अशुन कर, के पडशे कांइ आपद
ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, हांश माहरा. निभ
लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे. नारी
नामिनी, दैवगति क्वानी लहेए ॥ ६ ॥ रवि नारी
ज तेण रे, दइडुं कम कंपे, अधूनि पंकजं हादिनाए
॥ दीरपचन नृपात रे, वलतुं एम वदे, हा नामिनी
दुःखमां नडीए ॥ ७ ॥ चिंता मकरिश नगाए रे,
ज वेशां हिनी, शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तापन अ
निनीत्र रे, तिमिर नगम समो, लोक मांहे केम थिनि
लहेए ॥ ८ ॥ जो होशे तुज कांइ रे, याचा अणना
णो,विरह व्यथा दुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज ग
थे रे, शरण अपनी तणो, हाश मही सुण नामि
नीए ॥ ९ ॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, थरतिजहे तिण पण घडीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी वाहिर वन जणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुले जावे वलीए ॥ नलहे र ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शुके जल मा छलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेंतलें, हाथांसुं शिर कूटती ए ॥ आंशुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट त्रूटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती डुःखपूर रे, आवी दोडी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुज रे, सामणि माहरी, दीधुं दैव विगोवणुए ॥ १५ ॥ फिटरे धीग दैव रे, इम कही ढली पडी, निरखी च क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने पडी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उवया व्याकु ल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ कव कवने कव रे, कहेने सुं थयुं, मूल अंतेवरनुं किस्युं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुझ रे, धीरज सहुं न कहेतां वारम लावीयेंए ॥ वेगवती तव कही रे इंम कहे, हे सुंडःख वदनावीयेंए ॥ १८ ॥
खी वात रे, नहींहो साहेबा, कहेतां नवहे ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय करुण करी, वज्र विषम छे वातडीए ॥ १९ ॥ चंपकमाला देव रे, प्रभु हृदयें सरी. दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥
॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हूं पण, पान लई पाछी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी नर हे ज रे, मुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं खडीए ॥ २२ ॥ के सोती कुण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी. के कांइ सापणी डसी गईए ॥ अथवा उत्कट रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥
॥ २३ ॥ निरखी माथा सूल रे, पडियां ग्रासको, पण नक्कनाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे. शुद्धि स वे गई, जीवडलो कही गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी नृपाल रे, कडुआ विष जिस्यां, मूर्छागत धरणी ढ

ल्योए ॥ वींज्यां सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टे मूर्छायी वल्लोए ॥ २५ ॥ लागो दुख अछेह रे, नेह विकल थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ रे हत्यारा देव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अप हरिए ॥ २६ ॥ जोमुज देवा दुख रे, समरथ तुं हूतो, मुनेकां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा दुष्ट रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीवडा, मन मेनूं सीधारतांए ॥ हा हा दूर्उ संताप रे, विरहानल तणु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते कगीनी आसीस रे, सुकृत फलें नरी, तेपण निःफल केम गईए ॥२९॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम नकही मुज, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत ए रीत रे, पहेली ताहरी, तो राखत हइडा उपरेंए ॥ ३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, जावि आपद सांभलीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंदा करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ क्षण हिमें गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू नय

एं नरेए ॥२२॥ क्षण बेशे मन शून्य रे, क्षण करे
घसी, क्षण वली करतो विलंवनाए ॥ गंमी नर म
र्याद रे, धीरज हारियो, ऐऐ मोह विटंबनाए॥२३॥
मलिया सचिव अनेक रे, दुःखभर भंगुरा, गदगद व
चने वीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक सा
हेवा, तुरत पणे जइयें हवेए ॥ २४ ॥ ढील तणो न
ही काम रे, देवी देखीजें, कवण दिसायें आक्रमीए ॥
जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवडो, रहे ते ना
न्हीमां संक्रमीए ॥ २५ ॥ करतां कोइ उपाय रे, जो
जीवे कदी, तो तुज नाग्य प्रशंसीयेंए ॥ वचन सुणी
नूनाथ रे, चाले वेगशुं, वींटचो परियण दासीयेंए ॥
॥ २६ ॥ आव्या राणी गेह रे, दीठी कामनी, दव
दाधी जिम वेलडीए ॥ शब्द रहित निश्चेष्ट रे, नील
वदन ठवी, दंत नीडी सेजें पडीए ॥ २७ ॥ मूर्छाणो
क्षितिकंत रे, भ्रांत नयण थयां, नेह दावानल वली
जग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, ऊठचो निज प्रिया,
देखी वली मूर्छा लग्योए ॥ २८ ॥ फरी ऊठे फरी
तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी ऊठे एम दुःख लहेए ॥
मंत्री मलीने अंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम
कहेए ॥ २९ ॥ अंग नहीं ते कोई रे, व्रण घातादिक,

अद्भुत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के मन पीहायें, राजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे निश्चें राय रे, देवी मोहियो,राज्य भंग थाशे सहीए ॥ करवो कोण प्रकार रे,इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे,बोल्यो तत्क्षणे, काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होवे कोइ उपाय रे, जेहथी नृपने,मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४२ ॥ मंत्री बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी. कालक्षेप केणी परे हूवेए ॥ राजादेवी मोहें रे, थाओ परवशें, काज अकाज नवी जूवे ए ॥४३॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे, विषनी विक्रिया, छे देवीए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध योग रे, विष टलशे परहो, राणी अति सुख पामसे ए ॥ ४४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, करत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री सर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥४५॥ कांइ करो महाराज रे, निपट अधीरता, नवलां मंगल वरतशेए ॥ सांभली एम नरेश रे, विकस्वर लोचने, हर्षसुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशे कोडी उपाय रे, नृपने लोजवी, मंत्रीसर मति आगला ए " ~~~

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नडीशा नल नलाए ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाइने, विषधर औषध मंत्र ॥ आमं त्रो मंत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आ देशें मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंभे मांत्रिक क्रिया, उचित कह्या सवि चाल ॥२॥ एकांते देवी ठवी, करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी जवसे, करशे ने त्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली उ सास ॥ ४ ॥ बोली एम नृप चिंतता, अर्द्धदिवसने रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवि, करे विचार प्रनात ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशायी आज, नेह मरयो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिव प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ ॥ इम चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयधाम ॥ एक एक साहामुं जुवे, जिम मृग चूका गाम ॥ ८ ॥ दीठी कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूखो अति दुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ए ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरता करहला रे, मो पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो कपर काढीने रे, प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥

॥ रे गुणवंति गोरडी रे,कांइ रही रे रीसाय ॥ विण बोल्यां मुज जीवडो रे,माछुलडा परें जाय ॥ प्रियारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ हठीली बोलो हो ॥ विरस थइ कुण कारणे रे, एवडो नेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज नवटे गजगामनी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औषधी रे, तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक नलहे पल जीवडो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं नकीजें तेहवुं रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ कथप्रिया दिन बहु चढयो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रीत मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥ तुं कहेती मुजने सदा रे, हृदय वसो छो मुज्झ ॥ ते मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्झ ॥ प्रि० ॥ ॥ ५ ॥ एक घडी मुज तुजविना रे, मुजने वरस समान ॥ तो दिन ए केम बोलसे रे, गोरी कहे गुण खाण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे, दोधी ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल थइ रे, जो तुं आंख उघाड ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे, जिम तरु नांख्या जाड ॥ प्रि० ॥ ८ तुं चतुरा चंद्रानना रे, जीव रहणनी वाड ॥ पण इंण वेला पदमणी रे, हीयडुं नाख्युं जाड ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी हसी बोलने रे, निंद रयणरी गांमि ॥ कर करुणा मुज कामनी रे, मननी पूर रुहाडि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा हा पण कहे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥ नहित्तो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥प्रि० ॥१२॥ धिग प्रभुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग राज्य ॥ संकट मांहेथी तुझने रे, हुं राखी शक्यो नाहिं आज ॥ प्रि०॥१३ ॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे प्रमदे गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण आवुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे छोडी हवे रे, तुजने पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं लोकने रे, फिट फिट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने धरणी ढल्यो रे, मूर्छावशें नूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सवलाने अवशान ॥ रं
गी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र ॥
कर्मयकी नवि छूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, मान अणी ज
ल बिंद ॥ संपद चपल सनावथी रे, जेहवी स्त्री सतं
द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
हवा सुपन जंजाल ॥ काया काच घटिजिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी०॥ २६ ॥ जन्म जरां मरणे न
ड्यो रे, ए संसार असार ॥ ईम जाणीने साहेबा रे,
मनकरो छ मन लगार ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संभालो निजरा
ज्यने रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण मानने
रे, पालो पडिन लोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे मं
त्रीसर रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहें मह्यो
रे, तेनणी रह्यो न जात ॥ रंगी० ॥ २९ ॥ में पूर्वे अं
गी कर्यो रे, साथें मरणनो बोल ॥ जो नकरुं तो कि
म रहे रे, सत्यवादीनो तोल ॥रंगी०॥३०॥ आज ल
गे में निरवह्यो रे, सुधो सत्य वचन्न ॥ ते अंतरासें
छांडता रे, नवटे माहरं मन्न ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ निज
मुखथी जे आदरी रे, थे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवसर
वहेली मूकतां रे, सहसा सत्य जजाय ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

जिण सत्य कारण होमीड रे, वह्निन पणे निजदेह ॥
मूर्छ पण लग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥
॥ रंगी० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जता रे, महारी
देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय
श्रम श्राय ॥ रंगी० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिड
रे, बहु परे सर्वे प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी
रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ
करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्त्र ॥ ते जणी मौन
लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी
ढाल इग्यारमी रे, कांतिविजय कहे एह ॥ मोह सु
नट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह॥रं०॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेख्या
पुरुष बीजा वली, करवा साज हठील ॥ १ ॥ तुरत
मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे
कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम
चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि
यें, कस्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहि थापिउ,
ते राणीनुं देह ॥ चाले नृप गोलो तटें,शबिका आगें

करेह् ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब डुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे ठूबकें,रोवे करता शोक॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ उलंगडी उलंगडी तो कीजे
मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन डुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले थावीने रे, वदन कूश्रा विछाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम छोडो श्रमने साहेबा रे,विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम मुख दीठे सुख पामुं सदा रे. छेह न थो क्षिति कंत ॥रा०॥२॥ तुमविण तुमविण श्रमने कहो कुंण राखशे रे, संकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, बहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो नशक्यो देखी दैव श्रटारडो रे. श्रमचो सुख निरधार ॥ नदींतो नदींतो समहु पण केम चूकीउ रे, मूके विण श्राधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरडा मली रे,करे घणा श्राक्रंद ॥ श्रन्न न श्रन्न न जावे नाठी निंदडी रे, वाध्यो दिल डुःख दंद ॥ रा०॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विर व्यापिया रे,घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहल सर्व सज्जु रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हायरस

हा वत्स हानिधि हा कुल दीवडा रे,कुलमंमण कुल मं ड ॥ हानृप हानृप अमने वेची चढावीने रे, प्रतका ई दिण तोड ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृद्धा ईम विलपे घणुं रे, नावी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खू तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ८ ॥ धिगधिग धिगधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने छोडीने रे, जो जावे छे आम ॥ रा० ॥ ९ ॥ मुजरो मुजरो अमचो कुण लेशे हवे रे, कुण देसे सनमान ॥ आतम आ तम निचिंतायें वाउला रे, इंम निंदे परधान ॥ रा० ॥ १० ॥ हाजिणे हाजिणे रुपें काम हरावीयो रे, वली हुउ निर्दंद ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रभु नारी कार णे रे, किम थाजीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो कदीहो रुप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥ इमकही इमकहो नयणे जल स्त्रवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥ रा०॥१२॥ जनक जनक तणीपरें पाल्या प्रेमथी रे, ए मयला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विछोह्या बापडा रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी नगरी दीसे थाल दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥ इंमकेइईमकेइ संचरता नृप मार्गें रे,जावें दीन वचन्न

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जब नृप नीकले, तब डुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे डूबकें,रोवे करता शोक॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ ठजंगडी ठजंगडी तो कीजे सुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन डुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले श्रावीने रे, वदन कूत्र्या विलाय ॥१॥ रायजिम रायजिम ठोडो श्रमने साहेबा रे,विण शरणें गुणवंत ॥ तुमसुख तुम सुख दीठे सुख पामुं सदा रे, ठेह न द्यो क्षिति कंत ॥रा०॥२॥ तुमविण तुमविण श्रमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, वहुला लाड लडाय॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो नशक्यो देखी दैव श्रटारडो रे, श्रमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीउं रे, मूके विण श्राधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे,करे घणा श्राक्रंद ॥ श्रन्न न श्रन्न न नावे नावी निंदडी रे, वाध्यो दिल डुःख दंद ॥ रा०॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विष व्यापिया रे,घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्व सज्जं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावत्स

॥रा०॥१४॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टाळशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुभग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञान विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्रपंच उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि एस वि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंभित रंभित पंभित कीधा विण गुने रे, खंभित देवे एण ॥ मंभित मंभित विधायें तुम सारिखा रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे,छोडे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे,दुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर थणघटतुं ईम राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ ईमपुर ईमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोळा तीर ॥ रा०॥ २१॥ वो शब ते शब तीरें तव उतरावीने रे, मंगावे चय

त्यांहि ॥ देतो देतो दान याचकने कतरे रे, न्हावा लागो मांहि ॥ रा० ॥ २२ ॥ नृपव नृपव नाहे त्यां जल जेतले रे, रहते लोक समग्र ॥ जलने जलने पूरें, तव एक ताणिर्यु रे, आव्यो काठ उदग्र ॥ रा० ॥ २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे, रे रे तारक जाडु ॥ लाकड लाकड जलमां सनमुख आवतुं रे, वेगें काढी ल्याडु ॥ रा०॥ २४ ॥ एह छे एह छे योग्य चित्ताने इंम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहिं ॥ बाहिर बाहिर काढयो ताणी तरकणे रे, जलकांठुं अवगाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो निडुं परवें रे,आपा परें ते थंन ॥ दीसे दीसे स्थूल कठिन आगें पडयो रे, जाणे बाहुण थंन ॥ रा० ॥ २६ ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो कुरियें बंध ॥ लटक लटकतुं अर्द्ध छुदो उपटी पडयो रे, ऊटीगया सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची घन साराद्रिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥ २८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरु रे, निद्रित लोचन नंग ॥ जलमां जलमां ठांनि रति आवी रही रे, वेतरी आणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

॥रा०॥१४॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि के रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम श्रमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक नणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुजग गंनीरता रे, निरुपम ज्ञान विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्रचंम उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए सवि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीधा विण गुदे रे, खंमित देवे एण ॥ मंमित मंमित वियायें तुम सारिखा रे, पमिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे,गोडे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे,दुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर थणघटतुं इम राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ इंमपुर इंमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गंगा तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥
शत्र ते शत्र तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

॥रा०॥१४॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माण कें रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुभग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञान विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्रचंड उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए सवि गुण निरधार आजथी रे, कीधा ते विण मर्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ पंडित पंडित पंडित कीधा विण गुणे रे, खंडित देवे एण ॥ मंडित मंडित विद्यायें तुम सारिखा रे, पडिया संकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, छोडे परसी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं कूण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर थणवटतुं इम राजीवा रे, लाहा वींगड वीर ॥ इंमपुर इंमपुर वासी वदन श्वेलता रे, पांहातां गोला तीर ॥ रा०॥ २१॥ जो शव ते शव तीरें तब उतरावीने रे, मंगावे पय

त्यांहि ॥ देतो देतो दान याचकने क्षतरे रे, न्हावा
लागो मांहि ॥ रा० ॥ २२ ॥ नूपव नूपव नाहें त्यां
जल जेतले रे, रडते लोक समग्र ॥ जलने जलने पू
रें, तव एक तोणियुं रे, आव्यो काठ व्यग्र ॥ रा० ॥
२३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे, रे रे
तारक जाहु ॥ लाकड लाकड जलमां सनमुख आव
तुं रे, वेगें काढी ल्याहु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ते एह ते
योग्य चिताने इंम सुणी रे, धीवर पेती त्यांहि ॥ बा
हिर बाहिर काढयो ताणी तत्क्षणे रे, जलकंपुं अव
गाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुने बांध्यो नि
डुं पखें रे,त्रापा परें ते थंन ॥ दीसें दीसे स्थूल कवि
न आगें पडयो रे, जाणे वाहण थंन ॥ रा० ॥ २६
॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो तुरंत बंध
॥ जटक जटकसुं अंदे छुटो जवहो पडयो रे, त्रूटीग
या सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें
केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची घ
न सारादिक गंधशुं रे, माल बनि बहुरंग ॥ रा० ॥
२८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निहित लो
चन नंग ॥ जलमां जलमां वानि रति आवी रही रे,
तेतरी आणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवं पेखवी नृपतिनो दिल जागीउं रे, नागो विरह वियं ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इणी परे इणीपरें का तिविजयें कही बारमी रे सुंदर ढाल रसाल॥रा०॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आंम ॥ चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पा लखीयें पोढाडीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एहके ते ह छे, के कोइ छलछे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अ छे, के विध धरिउं आंहिं ॥ ३ ॥ जवं सेवक जइ नि रखीउं, आवी शिबिका पास ॥ तवते शव हड हड हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ दैदै हुं वंच्यो ख रो, छेतरतां नृप छेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते जग साचा वेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो नमें, ज लत्कार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, थयो उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या नृपने पास ॥ बोलक व्यतिकर नृपनें, दाख्यो शकल प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

रंगास ॥ तेमाटे पूछे हवे, राणीने ईण गाम ॥ ७ ॥
॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी श्रांगीहे, सुंदर मारा
साहिबाने अंग, विच विच रतन जडावि;
कोडी सूरज करुं वारणेजी॥ ए देशी ॥
॥ मृगा नयणी राणी हे, सुंदरहवे नयण उघाड ॥
कहो राणी आलश छोडी,कचको प्रीतम अलजो करे
जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे हसित मुखें मीठडा
बोल, कहो राणी वीतक वात ॥ धुरथी जाणीजे
जिण परेंजी ॥ २ ॥ नयणा ते सुणी हे, राणी कहे
निद्रा छांड ॥ कहो पीउं कनाणो केम, जीवा वशन
ए नहोनेंजो ॥ ३ ॥ लख्खणभे कना हे, निकट चंद
पासलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, तबीप जा
ण्यां रां केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माद्दरी हे, सुंद
र पछे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम श्रम
मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव
ल किहां पाम्यो हार, कहो किम पेगो काव,किणे वा
ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे
वहनी छांहिं ॥ चालो पीउ घाउ सुख, संनजावुं श्र
म वातडोजी ॥ ७ ॥ नृपति तव श्राव्यो हे,सकल ज
न विंट्यो तेथ ॥ श्रमें जरी कोमल काय, तडकें तपी

थइ रातडीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो ठो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुभ निमित्तनोजी ॥ ९ ॥ जमी वन व.ी
हे, आवी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पान,
वेगवती चंचल तनुंजी ॥ १० ॥ निद्राभर तेणें हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपाडी लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे. मूकी
मुज नागे धीठ ॥ जर्यें थण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुंथयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे. पा
ठल मुख आगल पास ॥ सुण्युं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
घडूके ह. सबल दीये वित्त फाल ॥ रमे रीठ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक दुःख पूरें जरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केणि,वैरीअकारण अपहरिजी॥१६॥
चढीगिरि टुंके हे, करुं निज आतम घात ॥ चित चिं
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लड थडते पगेंजी ॥ १७ ॥
.गें तल सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ उंचो

अति जगमग ज्योति, जगके अंबर तल लगेजी ॥ १८ ॥ अवन मह्न राजे है, मोहन जिहां जगनो ना थ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उलस्यो जी ॥ १९ ॥ कीधी स्तुति मोटी है, ललित पद अथी गंभीर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सघल मनथी खिस्योजी ॥२०॥ कानें कही रुडी है, सरस ए तेरमी ढाल ॥ मीठी जिम साकर डाल, सुणतां काने अमृ त वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥ नगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥१॥ हुं शासन रखवालिका, चकेसरी मुज नाम ॥ आ दि छुवन रक्षा करुं, मलयाचल शुन ठाम ॥ २ ॥ म लय देवी मुज नाम ने, बीजुं ठाण गुणेण ॥ साहमी धर्म जणी चरण,प्रणमुं हुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कहिए हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पडे अव स्था माणसा, नटज्ञे सुख दुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछुं में कहे मावडी, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें स वि निरसतुं, तवता बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउं बंधु ॥ वछ सांजलो ॥ निर्गुण लोजी राज्यनो रे, कूड कपटनो सिंधु ॥ व० ॥ १ ॥ वड बांधव हणवा जणी रे, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग धाय मूके खरी रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वड बांधवें रे, पाडयो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ अनना वें अंते मरी रे, एणे गिरि ए थयो जूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठो माहरे सूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत जवें ते पापीउं रे, संजारे निज वयर ॥ व० ॥ ठल जोतो नर नाहनो रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यवन्तें नसके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारियुं रे, प्रेम निबड ले अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ लस जासे सीतल जलें रे, टलसे सवि संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठल ताके रसी रे, लागो रहे नित पुठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकली रे, क पाडी तेणे ऊठ ॥ व० ॥ ८ ॥ इंणगिरि टूंकें मूकीने रे, आप गयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्ये भेटीया

रे, तुं श्रीऋषभ कृपाल ॥ व० ॥ए॥ तूंगी हुं जिन न किधो रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ इज्जहो दर्शन दे वतो रे, दीधो ए सोनाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में वीनव्युं रे, जो तूंगी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं मह्यारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥ चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥ चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अति प्रेम ॥ व० ॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीनें जोडले रे, थाशे तुज संतान ॥ व० ॥ गर्न रोध तहारे थयो रे, तेतो नूत निदान ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे दुःख देतां वारशुं रे, निज सेव कने नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देशुं आकरी रे, खल न करे करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअडी रे, माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी चढरे रे, तुज विण कुण गुण गेह ॥व०॥ १५॥ प्रिया कहे खिति कंतनें रे,परम कृपापर जूंज ॥ प्रीतम सांजलो ॥ हार दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥ तस प्रनाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयणबहु मूल ॥प्री०॥ स घल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री०॥ ॥ १७ ॥ एहथकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान ॥ प्री० ॥ अतुल विपन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, नृत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें ते गयोरे, तुज वि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज गामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही इ
विता गणी रे, घणु डुःख पाम्यो नृप ॥ प्री० ॥२०॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेंचरी रे, नजपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्यूं वचन विचं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मितबोली तिका रे,
मुज डुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
नामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
कांतिविजय इम चौदमी रे,नाखी निरूपम ढाल ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे गण ॥१॥
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे ठे मुज पूठ ॥ जो

हुवा रूप निहालशे, शील खंमशे कछ ॥ २ ॥ सोक थरने मांहरें हुसे, जनमां वधे दुःखदाय ॥ खोइश तुं कुल वहडी, परवश वासें वताय ॥ ३ ॥ नवरस लोनी नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल जर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई थां ॥

रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीर नदी जल उछले ॥ वारुजी ॥ लटके पवन नी ठाट हो, मृगा नयणीरा नमर सुणो वातडी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥वा०॥ हीयडुं नाखे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन मुज दुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥ वा० ॥ सुक्क कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या बलें ते खेंचरी ॥वा०॥ कीधो फाडी दुजाग हो ॥ मृ० ॥ विच कलो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछयो वली देवी कहे रे, नूत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें ते गयोरे, तुज रवि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज वामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही ब
पिता गणी रे, घणु दुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥२०॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेंचरी रे, ननपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछयुं वचन विनं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मितबोली तिका रे,
मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
नामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इंम
आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
कांतिविजय इंम चौदमी रे,नाखी निरूपम ढाल ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इंणे गण ॥१॥
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे छे मुज पूठ ॥ जो

तुज रूप निहालशे, शील खंमशे कव ॥ २ ॥ सोक धरम माहरे हसे, जनमां वधे दुःखदाय ॥ खोइश हुं कुल वहुडी, परवश वासे वसाय ॥ ३ ॥ नवरस जोनी माहरो, अवगणशे कुल लाज ॥ थावी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल भर वहे, थावी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीर नदी जल उछले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन नी ठाट हो. मृगा नयणीरा नमर सुणो वालडी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥वा०॥ हीयडुं नाखे फाट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति वाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ ईम मन मुज दुःख धाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥ वा० ॥ सुघ्र कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या वलें ते खेंचरी ॥वा०॥ कीधो फाडी दुनाग हो ॥ मृ० ॥ छिद्र कस्यो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछयो वली देवी कहे रे, नूत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें ते गयोरे, तुज रवि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
विता गणी रे, घणु दुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥२०॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेंचरी रे, नजपंथथी आवंत ॥ प्री० ॥
॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछयुं वचन विनं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
मुज दुःखथी निसतंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
नामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंद्रावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इंम
आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
कांतिविजय इंम चौदमी रे, नाखी निरुपम ढाल ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांनल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इंणे ठाण ॥१॥
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे वे मुज पूठ ॥ जो

हुन रुप निहालशे, पीन स्तंभशे जाव ॥ २ ॥ लोक प्रेम मादर हशे. जनमो वधे कुशलदाय ॥ खोइश तु कुल वहुंशे. परवश नासे पलाय ॥ ३ ॥ नवरस लाली नाहलो. अवगणशे कुल लाज ॥ आवी मुरत जिम ताहरी. विघन सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल नर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीनो आई घां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ सुहीर नदी जल उघले ॥ वारुजी ॥ लटके पवन नी झांट हो. मृगा नयणीरा जमर सुणो वातडी. मा रुजी ॥ निरखी तट तरु मंडली ॥वा०॥ हीयडुं ना खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेचरी ॥ वा० ॥ दूणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु मांजे बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिनि दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इंम मन मुज दुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेचरी ॥ वा० ॥ सुक कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि चा यते ते खेचरी ॥वा०॥ कीधो फाडी दुभाग हो ॥ मृ० ॥ ठिद्र कयो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ २० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४३ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस छे नवनवा, सुपरत मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोडी ॥ बीजो खंम कहुं हवे, श्रालश निद्रा छोडी ॥ १ ॥ घुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सना सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस नंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥३॥ तेहनणी मन थिर करी, मूकी श्रलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांनलो, सरस कथा संबंध ॥४॥ लही हवे कुमरी छनग, यौवन पूर श्रनंग ॥ कार्ले काम समूड्ना, उगमें विविध तरंग॥५॥

॥ढाल पहेली॥ पनामारु यौवन आईजी पुर ॥ए देशी॥
॥ यौवन रस पूरें चढी रें, नवलगोरीते गात ॥ झलकें करे उविचंद्रिका रे, जाणु आसो पुनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पुर, राजी रूपे लूटी आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण थोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु वेणी नमरनी ठेल ॥ क० ॥ २ ॥ जालवतुं जाग्यें नयुं रे, वीपे सवल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा नणी रे, विधि मांमयो क नकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ वीजडिया मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गडी रे, जिम नर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे. नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवानल संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥ बिंदु परवधारे अतिकला रे, तस मुख चंद हसाय ॥ निरखी खिसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बाहडी रे, तेह सु हावे बाल ॥ अनिनव उपे जोडले रे, नमी आवी क

उपलक माल ॥ क० ॥ ८ ॥ गोल कठिन कंचुक कस्या
रे, कुच युग एम शोभाय ॥ काम नृपति जीतवा ज
णी रे, उंधा तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ९ ॥ उदर स
कोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें
जाणो पडे रे, अति कनक तबकने वान ॥ क० ॥ १० ॥
लाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केडनो लंक ॥ देखतही
वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥ क० ॥ ११ ॥
जंघ युगल दीपे जलां रे, अपला कदली थंभ ॥ म
दन मालियें सिंचिया रे, जरी लावण्य अमृत कुंभ ॥
॥ क० ॥ १२ ॥ पंना मांसल सुंदरू रे, पग काछव
अनुहार ॥ नख तुलना करवा भणी रे, जाणे कमल
लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आं
गुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक मंडित बेहणी रे,
रवि पतिनी एहवी लहंत ॥ क० ॥ १४ ॥ पगें झांझर
झम झम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लखी पुंठ
नोंहालणो रे, तस पंठ लाजे हार ॥ क० ॥ १५ ॥
कर कंकण मणिमय जड्या रे, कानें कुंडल जोड ॥
शोहे रवि शिणगारथी रे, गज गामिनी शिर मो
ड ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणुं दिन दिनथी रे, पर

लायक ते थाल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, इम कांते पहेली ढाल ॥ क० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अत्रे एह नरतमां, पुरवर पुहवी गण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति नाण ॥ १ ॥ पटराणी पदमावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूउं, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणो, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, नूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कामण प्रमुख, शाख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ निजगणु आपी मोकले, वीर धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंद्रावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो नेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल बेठा सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी नृप कहे इस्यां, ए कुंण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥ कही काम निज स्वामीनां, कगधो तेह प्रधान ॥ नृप दर्त मंदिर जई, उतरिआ शुनथान ॥ ए ॥ राज कुम

र मन कौतुका, निरखत पुर आवास ॥ नमतो नम तो आवीयें, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥
॥ ढाल बीजी ॥ प्याहारा मोहला कपर मेह, जबूके वीजली हो लाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥
॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां लोला ल निहाली० ॥ मांहे मींट अनूप कुमर, कनो जिहां हो० ॥ कु० ॥ जक नपडे तिल मात्र, के विरहथी परजली हो० ॥ के० ॥ कामातुर अकुलात के, हुइ मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अंग वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो सु रपति जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंम्हाकार सुजंघा युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर कटीनो लंक वि राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ मावे करतल माग नलो मध्य अंकथी हो० ॥ न० ॥ हृदय महा सुविशाल छ जा लोगल जिसी हो० ॥ छ० ॥ रेखा त्रण गलनाल कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूडा चंचु स मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्पण उप मान कपोलें नासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी का नें अडी बिहुं आंखडी हो० ॥ अ० ॥ स्याम नमर

अनुमान मिला रतिपति तही हो० ॥ मि० ॥ ४ ॥ अ
निहारी भवं तास घडचो जेणे एहवा हो० ॥ घ० ॥
निरख्यो रूप निहाल जनम सफलो हुवो हो० ॥ज०॥
नृप बाला नरी नयण पीये रस रूपनो हो०॥ पी० ॥
लागो जइने गयण उमाहो भूपनो हो० ॥ ठ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
वाध्यो विरह विशेष अलेख उपापलो हो० ॥ अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अठे एह बालके हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इंम चिंतवता लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी ला
लिका हो० ॥ तला० ॥ कुमरें सकल वृदंत चतुर प
णें वाचिया हो० ॥ घ० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमांचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अठे तुज
लाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण लाति जायो तुं महाबली हो० ॥जा०॥ वीरधवल
नी लाति अ हुंतुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली बारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० रही० ॥ भे
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वां

चो ईम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ कु० ॥ ने
ह निविडने तंत विहुं मन साधिउं हो० ॥ त्रिहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंन निहाले वली जिहां हो० ॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संवाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ ठांमो निरखण नेग उतावलो काज छे हो०
॥ १० ॥ वेरवसाव्यो थाय तिणे तिहां आवीने हो०
॥ ति० ॥ हरुनाव्यो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथडे हो० ॥
हि० ॥ मांमे आघा जोर चरण पाछा पडे हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घडी हो० ॥ ह०
॥ रहेसे पण निशिचार आवीश हुं दडवडी हो० ॥
आ० ॥ १२ ॥ धारी ईम मनमांहे गयो निज थानकें
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानकें
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप यइ फाल दिये गढ ऊपरें
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
हो० ॥ वि० ॥ १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुप ईणे ठाम आव्यो कि

म लिंगनां द्वा० ॥ श्रा० ॥ अनिट्ठा दरवान मना इ
षो वेचिया द्वा० ॥ मू० ॥ के कोड मंत्र निशान निगो
जन तचिया ॥ द्वा० ॥ नि० ॥ २४ ॥ इम चिं
तवीने तेह मांहां रूपं दर्ण द्वा० । मां० ॥
जान्दै धर्म तेह समाप्त [illegible] द्वा० ॥ स० ॥ आ
[illegible]

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए चूरत, लागो कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्यो ए एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ वोडीने दासने द्वारें, ठानेंसें ताल्लुं दीधुं हो ॥प्र०॥८॥ कुमरी कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥ कनकवती ईणे कपट करीनें, राख्यांछे मिहु रोकी हो ॥ प्र० ॥ ए ॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसाली, अनरथ करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर नणे एहनें हुं कूडें, वंची आव्यो आहिं हो ॥प्र०॥ १०॥ वात करे जई ईम तेणो वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी प्रकाशे सुख रस वाही, दोठी वात उलासें हो ॥प्र० ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्रे ख्युं हो ॥ प्र० ॥ सुनट घटा वींटये नरनाथें, कन्या मं दिर वेख्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी देदे विप कन्या, हुं सरजीको नार्ये हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अ नरथ लहसे, ए आयो परायें हायें हो ॥प्र०॥ १३॥ कुमर नणे शुनगे को वोल्हो, एहथी नहीं मुज पी डा हो ॥ प्र० ॥ परचर पेसे तेतो किहां किणे, राखे बलपल बींना हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ ईम कही व्याप शि खायी काढी, गुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तत

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इम बीजे खंमे, ए
थइ त्रीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥
मलया किम फुःख पामसे, मानो जेह मरींद ॥ १ ॥
हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्र
गट हूउं नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ क
हे कुमर अनरथ वडो, हुउं एह विसराल ॥ जो वली
रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे
तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता रांना
लजो, कगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कह्यो शुकन मेला
वडो, आपण विहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि,
मकरें चिंता तेण ॥ ५ ॥ वलि अनोपम तुजने कहुं,
सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघला
थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तेय द्विविस्ततूत्या, (चिम
त्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकंचि
त्त, मुपायां श्चिंतयेद्वहून् ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण चकेखा
ढांकणे, इम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी,
ए श्लोक सबल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साज
ना. कुशल्या होजो पंथ ॥ देजो वेग मेलावडो, मदे

जो लखमी गेंय ॥ ८ ॥ कहे बाला नरी जोयणां, रे रबलां गोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन खूतो शाल ॥ ए ॥ सुत मोहोलथी नीसरी, आवी च ढयो केकाण ॥ नियतें प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी ठाण ॥ १० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ करेलणां घडिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीठो सुने,इम कही कुंठ तिवार ॥ १ ॥ जविक जन सांजलो रे, मलयानो अधिकार ॥ ज० ॥ एतो सु णतां हर्ख अपार ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चाकुरी, दीठी अधिक यदीत ॥ थोडादिनमां जेहथी,वा धी एवडी प्रीत ॥ ज० ॥ २ ॥ इंम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहे पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ राज कुमर इंम चिंतवे, पण वांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करणुं तेह ॥ ज० ॥४॥ तिंणे अवसर एक आविउ.वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांजल नर पुरुहूत ॥ ज० ॥ ५ ॥ पुत्रि अमचा सामीनी, मलया सुंदरी नाम ॥ तास स्वयंवर मांमीउं. करीने प्रतिज्ञा आम ॥ ज० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्वे परिया तणुं, वज्र सार छे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ न०
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायनां, नंदन तेहण काज ॥ दू
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ न० ॥ ८ ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥ कुं
णजाणे एहथी विधें, योग लिख्यो थानार ॥ न० ॥
ए ॥ ज्येष्ट कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ न० ॥
१० ॥ वाटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउ विलंब ॥ क
री उतावलो मोकल्यो,लगन अछे अविलंब॥न०॥११॥
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नृपाल ॥ कुमर सना
मां सांजली, चिंतवे इंम हरखाल, ॥ न० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, नोग दुःख संयोग ॥ जुखमां
हे जोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ न० ॥ १३ ॥
काज हतुं सांसें पडयुं, सिखाग्रहुं ते आज ॥ विश्वा
वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ न० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल ॥
राजपुत्र कुल अवगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ न० ॥
॥ १५ ॥ तव नृपनिरखी पुत्रने, कहे वच्छ तुं शुनका
ज ॥ बल वाहनना घाटस्यों, रातें सधावो आज ॥
न० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें नमी, तात वचन

परमाण ॥ वली सज कीधुं तावली, वीदयो दरखें ग
ण ॥ न० ॥ १७ ॥ लखमी पुंज मनोहरू, सुत हयो
सार्थं हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
धार ॥ न० ॥ १८ ॥ खूनां मुज निशिनें समें, करें उ
पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र नूषण हरे, गुन बीहावें सोइ
॥ न० ॥ १९ ॥ मात कनेथी में ग्रही, हार उच्यो मुज कं
ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो नेणे उलंठ ॥
न० ॥ २० ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे डुःख ॥
करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने अनिमुख ॥ न० ॥ २१ ॥
जो नापुं दिन पांचमां, ते मुंनावली हार ॥ तो मुंज
काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ न० ॥ २२ ॥ हार
कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
तिज्ञा आकरी, डुःख धरती इम माय ॥ न० ॥ २३ ॥
अदृश नहे जे रातिमां, राक्षस के चूडेल ॥ पोढीर
एक बे रही इहां, नाखुं तस पग जेल ॥ न० ॥ २४ ॥
स्ववश करी तेह डुष्टनें, लेई हार नतिनांति ॥ सुंपी
माताने पछे, चालीश पाछलो राति ॥ न० ॥ २५ ॥
राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंमें
ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ न० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी कवि ॥ वार जडी खांडुं ग्रहो, वेगें दीवा पूर ॥ १ ॥ मध्य रयणीनें आंतरें, चंचल सवल जस टेक ॥ गोख मा गेंथी मलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर वि चारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली नली, आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलख लें, उपें कंकण रेह ॥ तेह नणी कर नारिनो, एहे निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी ठे इंहां कोय ॥ देव सक्तिनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय ॥ ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांडुं खरुं, तो वली जासे नागि ॥ चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥६॥ एम विचारी कवल्यो, त्रिवली नालें चाढि, चढि वेगें कर कपरे, ग्रही वे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिउं आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल वींवरातो रे, उ लट पलट करी चाल्यो जाय ॥मं०॥ ॥ १ ॥ निरनय वेगें रे कुमर ते कपरें रे, तेहनें नारें कर लचकाय ॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां हुं ए किम थासे सूल ॥ हार नपामे रे जननी जो हवे रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय वियोगें रे चली मुज तातजी रे, धरवा प्राण असे अ समथ ॥ हैहे दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इंम चिंता भर बेठो तथ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव रव भूमिनो रे, भूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारि ग लीने अरधी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विछोडावुं रे जो जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं० ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी कलयो रे, वेगो वा नें आंवा गाँठ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे, कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥ व दन विदारुं रे हाथ विन्हे ग्रही रे, ते मांहेथी काढी एक नारि ॥ वचन कहंनी रे माहारे इंण समे रे, श रण होजो महावल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकसित लो चन थाय ॥ दूरें कहाडी रे अजगर नारीथ रे, देखे चमत्का मुख्यगत थाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मलया शररीरे निर

॥ दोहा ॥

॥जणे कुमर क्षीणोदरी, मांमी कहे तुं वात ॥ अजगर वदने किम पडी, रातीर्तानटग्रात ॥ १ ॥ कहे कुमरी हुं नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कवि यथइ जे कहुं, अवर दात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवामां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे रातिमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे छे साहमो धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीधो अछे, के कोइ जार लडाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो, आवे छे इंणिवाट ॥ मीट न पाडुं गोरडी, ए अवसर ते मोट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका टाल ॥ आंबानां रसमां घसी, कर्युं तिलक तस नाल ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥ रूप पालटयुं तुझमें, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष गया मांज्या पछी, थाशे मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण बे ए एक छे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इंम कही निरखत वाटडी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ९ ॥ तरुणी हरिणी परें धसी, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें, पूछे तस अवदात ॥ १० ॥

ल सामिनी; पण नांव देखे कोइ, किहां अवगुण क
णी ॥ ६ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं; ते साथें
ईम रोप, तणु कारण किस्युं ॥ कुमर कहेसंतान, हो
वे जो शोकनां; शोकतणे मनशाल, समा हुए सहेज
नां ॥ ७ ॥ नारी नणे ए साच, कह्यो ले जेहवो; जो
तां तेहनां छिड, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
त, थइ कौतुक कथा; दीठी कहुं तुज आगें, नहो ते
अन्यथा ॥ ७ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणें;
हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर
विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
नेह, कारणथी कतरी ॥ ए ॥ पामी नहिं में शुद्द,
किहां रमणा लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व
गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडो श्रीमुखें; वारी हुं
ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण व
हु मूल, लुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ न
पति कनें ॥ अवसर देखी दोप, कपाडे अतिघणा;
विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ
ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप
वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र महाबल जाणियें ॥ १२

॥ छठी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही, मोहवास, नरी मधुखंमनी ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोप गहिल नरपती तिहां,श्रमने करी विदाय ॥ चंपकमाला नामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्यतिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिका, थई रोप असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरू, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो,ईम कहे चंपक माल ॥३॥ कन्या तेडी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ भ्रमनूली मौनें रही, मनमां पेठी जाल ॥४॥ चित्त विकल्पी कूड ईम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी,अपहरि लीधो केण॥५॥ अवगुण ईंधण अति सवल, वचन पवन नृप कुंम ॥ रोप अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलडी, करहलडी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री नणी, फिट पापिणी हतियारी, सुखडुं कांई देखाडे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज न गाडे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोषें नरी, जिम वि

पहुरनी दाता, आनवें नामी मारै होगाज ॥ कन्या
मदै नैरको पड़ नामी नपराजी बेर [illegible] दआरे
हागाज ॥ [illegible] ॥ गद्दे, नृक दिगं [illegible], [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ज ॥ ८॥ वाल्ही पण वेरणी हुई, जिम विषधरीयें मूकी थाणुनी होय हुवालडो होराज ॥ रिपुकुलने जो न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ दुःख जरी रयणीनें गमी, प्रह काले नृप तेडी. सेवकनें इंम जाखे होराज ॥ मलयाने ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूछो, रखे किहां किण ए जाखे होराज ॥ १० ॥ मंत्रि सुबुद्धि सुण्यो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, श्रावी नृपने जेटे होराज ॥ करजोडी इंम वीनवे, असमंजस ए मांड्यो, जूप कहो किण खेटे होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो क्यां पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, नघटे जेह उछेरयो धुरथी, आपणे हाथें होराज ॥ १२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम नं होवे पछतावो, पछे फल पाकतां होराज ॥ सकल वि चार सुणावीउं, सचिव जणी नृप धुरथी, सचिव ग यो जाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद गद कंठें इंम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा नृप किम कोप्यो, ते कहे नजाणुं कांई होराज ॥ क

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसडा, ईम संभ लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धुंधलो ॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांभल पुरना ईस ॥ नरिंदजी ॥ शुनह करी में रावलो होलाल, अलवें पाई रीत ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो म्हारो होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरणमें ते सिरें होलाल, दंम कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रभु पद भेटवा होलाल, तुम वचनें महा भाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं तेवली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ ईम नग मेंतो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली त्रिहुं मायने होलाल, कहेजो सुज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जेमें आचस्यो होलाल, ते नांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखाडी मारतां होलाल, नहुवे कालकलंक ॥ न० ॥ सं० ॥ ५ ॥ नृप विचारे देखजो होलाल, करी वैरीनां काम ॥ सुलोचनी ॥ शुनह पूठावे आपणो होलाल ॥ अण जाणी थइ आम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र भलो मल

सीधां होलाल, पूछे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥ जो तुज मनमां एवडी होलाल, हुंती ताती रीत ॥ सु० ॥ कांई स्वयंवर मांडीने होलाल, तें तेडया थव वनीत ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाल्याजे पोता वटें हो लाल, पहेलां पोषी लाड ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने हवे होलाल, बेठे कां दुःख हाड ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥ किम करशुं रहेशुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं त ॥ सु० ॥ लागे ए थलखामणो होलाल, फीटल प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कुमरी रयण सीधावते होलाल, जगत हुवं गत रेण ॥ सु० ॥ च० १८ ॥ राय सुता पगमां चुभे होलाल, तीखा कंटक कोडि ॥ सु० ॥ माज रक्त रसिया मुखें होलाल, पैसे पगतल फोडि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥ थाई कूश्रा कंठडे होलाल, बोले ईम मुख वाच ॥ सु० ॥ कुमर महाबलनो ईहां होलाल, सरण हजो मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ बाल जंपावे कूपमां होलाल, पडती जिम जलबाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव हा हा रवें होलाल, पूरे गगन विचाल ॥ सु० ॥ च० ॥ ॥ २१ ॥ सिंचे धरणी आंसुयें होलाल, निंदे नृपने

सु० ॥ देता दैव चेतनडा होलाल, आव्या
लेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे
होलाल, संतुठो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंमे
होलाल,कांते कही ए ढाल ॥सु०॥च०॥२३॥

॥ दोहा ॥

हवे नरपति हरख्यो हीये, चितमां चिंते एम ॥
पुत्री दृष्टने, थयो वंशने खेम ॥१॥ आमंत्र्या
ह जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्यार्थे
ति थावो किण वात ॥ २ ॥ वली पूछुं कनका
मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवछुं,
होतो तस गेह ॥ ३ ॥ बार जडयां देखी ति
मे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाडनो, तेहमां
नृप ॥ ४ ॥ गर्भ भवन दीपक करी, लेई हार
॥ दीठी नृपें विवरथी,करति इम मनोहार ॥५॥
ाल नवमी ॥ केशर वरणोहो काढ कसुंबो
रा लाल ॥ ए देशी ॥ अथवा नेमि पर्यपेहो
प्रीति संभालो महारा लाल ॥ एदेशी ॥
हार ठविला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥
हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ कुलज आपो
रमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सबल

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो गनो पहे लो ॥ मा० ॥ नूप चंजेरी हो कीधो घहेलो ॥ मा० ॥ वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स घली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांजलिने हो नृपति वोल्यो ॥ मा० ॥ इंण पापिणीयें हो मुजनें जोल्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोख्यो ॥मा०॥ मलया माथे हो दूषण डख्यो ॥ मा० ॥३॥ धिग तुज जीव्युं हो अधम वगारी ॥ मा० ॥ वांक विहूणी हो मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीडी ड हवी ॥ मा० ॥ ऊंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा० ॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पवाडे ॥ मा० ॥ इंम कही वारे हो हाथ पछाडें ॥ मा० ॥ गाढें पोकारी हो धरणी ढलीउं ॥ मा० ॥ डुःखडे दाधो हो मूर्छा मलिउं ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणीने हो दोडी आ व्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इंम कहेताव्या ॥ मा०॥ तेहवा मांहे हो कनका त्रावी ॥ मा० ॥ गोख मारगथी हो कूदी नावी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पूर्वे हो जई ऊंपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्क्षण आवी ॥ मा० ॥ शून्ने मंदिर हो खूणे पेठां ॥ मा० ॥ सुणियें वातो हो जणनी बेठां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

वाल्युं हो नृपतुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो ला
री पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोडी ॥ मा० ॥
रीजने पूछे हो वेकर जोडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ छुं मांमयुं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीना हो करणीसूत्री ॥ मा० ॥ ए ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ दुःख
पावकनी हो ज्वाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति दुःखनां हो लोक विनागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव विहुनें हो इंम समजावे
॥ मा० ॥ मूआं जगमांहि हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ जाग्यें जदीयें
हो जइ जीवंती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसाडी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मनुया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन दुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ वार उघाडी हो रा
णी जांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खें ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ नाठी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केडें लागी ॥ मा० ॥ राय कह्याथी हो तस घर लूंट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो हो पकडी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्तधारी ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नरपति वलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां तिहां नमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनका वीहिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इंम मुज नांखे हो विहुं विछडीयें ॥ मा० ॥ रहेतां चेत्तां हो हाथे पडीयें ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥ मुजने छोडी हो दोडी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो धमकी वहेली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलडी हो रही त्यां न शकी ॥ मा० ॥ रातें कठी हो वनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आवीवुं हो जप धूजंती ॥ मा० ॥ वात कही में हो जेहवी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाशुं हो रयणि विहाणी ॥ मा० ॥ इंम कही सोमा हो आगें चलाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खंडें ॥ मा० ॥ कांति पंपे हो वचन अखंडें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ ढाल दशमी ॥ हरि कोइ जोवनीयानो ल
टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हारे वारी विहुं तिहां वेखे काव तणी बे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हारे वा री कुमर ते वेखी तेहमां चिनर विचाल जो, धूणीरे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हारेवारी तीन कारज हवे करवां माहारे आहिंजो, एकतो रे नृप बलतो घयमांथी राखवो रेलो ॥ हारे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हारेवारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हरि वारी इंम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते सांची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हारे वारी तेमाटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हांमशुं रेलो ॥ हरिवा री तिहां रहीने कनकानुं निरखीश रूपजो, करतो रे ठल बल मुलावजो पामशुं रेलो ॥ ४ ॥ हारेवारी हुं पण जइ नर बलता नृपने संग जो, वाहरे नवली वुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हारे वारी नामांकित सुत ये तुज सुहा नंगजो, मदेशे रे एहवो तुम को गोरी

ख्यी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी छुड़ा दीधी ते थापि शि र आपजो, इंम कहीरे इहां गानी करतां कापजो रे लो.हांरेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो, मजजो रे कार्जे साजे ते चावजो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे वारी साधी कारज सघलां काले साजजो. आवीश रे वे षीजन मननें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वयन चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही न ऽटकलो रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वे शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥ ८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठाणजो, दीठारें ताजनमां जलछुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ९ ॥ हांरे वारी र मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, विंटीरे सेलढोयें नांखी गलदिशा रेलो ॥ हांरेवारी पडती लै गज मुख मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें एह ठाणजो, तेहनारे इहां खंभ कदाचित् पामीयेंरे

जो ॥ हांरेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाण जो, मुझरे पूलामां ठवी गजने दीयें रेलो ॥ ११ ॥ हांरे वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति सुत आगें चालीउ रेलो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउ लोक अनेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें नालिउ रे लो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण कामजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हांरे वारी चयमांथी उललते अति उद्दामजो, दीसेरे प ण धूमें नभतल भेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हांरे वारी भुज उंचा करी दोडे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इंम मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हांरेवारी जीवे छे तुम पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां भोला इंणी परें रेलो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कण सुधासम सुणीने तेहनां वयणजो, साहामारे आव्या लख लोक उजा यनें रेलो ॥ हांरेवारी जीनें लवण उतारुं तुजने स यणजो, क्यांछे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो ॥ १५ ॥ हांरेवारी इंम सुणी बोले तेह निमित्तनो जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेलो ॥ हांरेवारी तो नांखुं आगमगति हुं इणें ठाणजो, इंम सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हांरेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप कां अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चे जीवती रेलो ॥ हांरेवारी निमित्ततणे बल जाणुं में महारायजो, मतिबलेंरे कहुं हुं हुं तुमने तेवली रेलो ॥ १७ ॥ हांरेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल ईहां वली रेलो ॥ हांरेवारी बीजे खंडे ए षट दशमी ढाल जो, भाखी रे ईम कांति विजय रंगें रली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप कहे सुण निमितिया, दुःखियो हुं विण नाग ॥ देखुं मलया जीवती, एवडो किहां मुज भाग्य ॥१॥ काल कूही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी विचित्रता, न मुड भाखे एम ॥ २ ॥ शोधी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोडि ॥ दुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोडि ॥ ३ ॥ तेह भणी मुजनें दुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी ईम नृपनां, बोल्यो कुमर बनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नृपतिजी रूडा, सांभल चतुर सुजाण होरेहां ॥ बात न भाखुं कूअडो ॥ नृ० ॥ आजदिवस सुख गा

ए होरेहां ॥ बारश तिथि थइ रूअडी ॥ नू० ॥१॥ आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च ढे ॥ नू० ॥ वेग सहु अवनीश होरेहां, मंमप आ मंवर मढे ॥ नू० ॥ २ ॥ शोनित तनु शणगार होरे हां, कुमरी दरिसण आपशे ॥ नू० ॥ देखीत सहुता कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ नू० ॥ ३ ॥ रचि स्वयंवर शुन एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे ॥ नू० ॥ जो ठे तुज संदेह होरेहां,तो अहिनाणी ए धारजे ॥ नू० ॥ ४ ॥ मलया मुडिरयण होरेहां, का सें तुम कर आवशे ॥ नू० ॥ तो साचां मुज वयण होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ नू० ॥ ५ ॥ चौद शने परन्नात होरेहां, पूरवदिशि पुर बाहिरें ॥ नू०॥ नृपनां वत्र मन खांत होरेहां, परखावण तुज कुजहुरी ॥न०॥६॥ पट करशो एक थंन होरेहां, पोल समीपें थापशे ॥ नू० ॥ लहेता लोक अचंन होरेहां, देख त रंग नधापशे ॥ नू० ॥ ७ ॥ ते लेइ तेणिवार होरे हां, थिरथापे मंमप तलें ॥ नू० ॥ नेदशे थांनो ते ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) बाण सहित पूजा नलें ॥ नू० ॥ ८ ॥ थापे थांना ठेह होरेहां, जे नर तेह चढाइनें ॥ नू० ॥ नेदशे थांनो तेह हो

वेला, होशे घर तुज जाइने ॥ नृ० ॥ ए ॥ अनोपम से अतिनीति होरेहां, पूजाविधि ते धननी ॥नृ०॥ जाण्या ए अवदान होरेहां, निमित्त कलायें अनुम नी ॥ नृ० ॥ १० ॥ मनसे ए अहिनाण होरेहां, नि मित्त वर्ले जाण्या अने ॥ नृ० ॥ न मले जो निरवा ण होरेहां, मन मान्युं करजे पछे ॥ पंमितजी रूडा ॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम जाण्यें तुं आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस पास होरेहां, उप कार धुर गावियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए अधिकार होरेहां, जगदीशें तुज गुण छते ॥ पं० ॥ १३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि नू पण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो द्युं दान होरेहां, तो उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते ह होरेहां, धन तणी पूजा वडी ॥ पं० ॥ नृप वचन ठेहडे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठडी ॥ पं० ॥ १५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल होरेहां, महाबल नंदन परवडो ॥ पं० ॥ वरशे ते ह

जवाब होरेहां, कुमर कहे एम परगडो ॥ पं० ॥ १७ ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी नणी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ सामंबर महाराय होरेहां, आयो मंदिर कजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति तिणवाय होरेहां,साथें वली जोजन जमे ॥ पं० ॥ १९॥ वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा ॥ पं० ॥ गह मह हुइ परजात होरेहां, रवि ऊगे पूरवदिशा ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां, पूरण ढाल इग्यारमी ॥ नृ० ॥ कांति कहे ससनेह होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ नृ० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूक्या जिके,गालण गजनुं गाण ॥ तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥ करजोडी कौतिक जथा, बोल्या तिहां एम वयण ॥ लाधुं गजमल गालतां, ए प्रज्ञु हुआ रयण ॥२॥ नृप लीधी ते मुद्रिका, रजत पणे ससलूंण ॥ वांचत नाम सुता तणुं, इंम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो अचंनो मुद्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमित्त ए कारण, मलतां दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो हा

नो ईहवुं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार
ण इहां, संनवियें खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप वि
शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
स्यो मांमे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा
चियें, होये जूवके साच ॥ पेटें पडचा पतीजीयें, ईम
बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी,
लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक
ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, श्रा
व्या नृपना नंद ॥ श्राप्यां मंदिर जूजूश्रां, त्यां यत
खा नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने,जो श्रापो श्रम सीख लाल
रे ॥ मंत्र श्रई में साधिउं, ते साधुं मन ईव लाल रे
॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए श्रांकणी ॥ जो
नवि साधुं ए समे,तो वलतुं न सधाय लाल रे॥ कोई
विघन शुन काममां, श्रण लाध्या उद्दराय लाल रे
॥ सु० ॥ २ ॥ श्राजुनी एक रातिनो, श्रापो जो श्रव
काश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रजातमां, श्रावीश हुं तुम
पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप ईम कहे,
मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते श्रापुं हवो,

छेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन लेई केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहि लाल रे ॥ रवणि गमाडी दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रहकालें पग नूपनी, जेटे नाणी आय लाल रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, तिहि थई निरपाय लाल रे ॥सु०॥६॥ कुमर कहे कांईक थई, कांइक रही छे शेष लाल रे ॥ अर्चन थंनतणुं करी, जाईश वली तेणे देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंननी, पं हेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां आईने, बोल्यो धरी इंम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुम आदेशें हुं गयो,पुरबाहिर परत्रात लाल रे ॥ पोहोल तणी माबी दिशें, दीठो थंन सुजात लाल रे ॥सु०॥ ॥ ए ॥ इंम सुणी राजा कहीउं, ते नर सार्थे लेय लाल रे ॥ थंन समीपें आवीउं, निरखें दृष्टि नरेय लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो, आवे पूजण थंन लाल रे, तेहवे तेह निमित्तिउं, बोल्यो इंम धरी दंन लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अड शो जे ए थंनने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥ तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाछा खिसे, मनमां बी

कीता अखेद लाल रे ॥ नृप नाणी पूजो तुमें, पूजा प्र
भृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
नाणी तिहां, पूजी वेगे ध्यान लाल रे ॥ हींपद सुख
थी उच्चरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥
थंभ उपाडी पुर नणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥
सु० ॥ १५ ॥ मंडपमां आमंथरें, थाप्यो आणी का
र लाल रे ॥ पटकरणी पथर शिला, कुमरें करावी
त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ उनो खोसे थंभपें,
धरती मांहे बे हाथ लाल रे ॥ थंभ निपुण निज सं
चर्यो, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ वें
कर सुख ऊंचे रहे, शिला थकी ते थंभ लाल रे ॥ वा
ण धनुष तेहथी ठवे, पश्चिमनें आरंभ लाल रे ॥ सु०
॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण उत्तर भाग
लाल रे ॥ गंधर्वें मांगयो तिहां, गावा मधुरो राग
लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंभ धनुष पूजावीनें, नृप
पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥२०॥ नाणी नृपनी
नीढमां, देखी अवसर खास लाल रे ॥ जई वेगे गांध
र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥सु०॥२१॥ वेगा नृप

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे॥सु०॥२२॥ डाल थईए बारमी, बीजे खंमें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लालरे॥सु०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणो किहां, गयो बखर श्रो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी नूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ २ ॥ नूप नणे पहेला इंणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥३॥ वचन सवे तेहना मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे,हे हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुअर सुणी तिहां वस्त्रसुं,ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठेहडे, ईम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नूपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहि ते कहे, आव्या हुं शो अर्थ॥ ७ ॥ मलया बाला बापडी, मारी विण अपराध ॥ हवे नूपनें किम वालशे,उत्तर देई अबाध ॥८॥

एहवामां नृप कहेणथी, उंचे स्वर संभळाई ॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसनामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नृप हगाळा रे, नरपति गोगाळा रे, याउ वजमाळा विकथा गोडीने रे ॥ मंमपतळें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो होने रे ॥ १ ॥ शर पुंखो जोरें रे, थांना मुख कोरें रे, करे घात कगोरें ये दल जुजुआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी छलकलिने रे, वरसे थटकलोने श्रम नृपनी पूछा रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, छवयो सपराणो रे, आवे हर्ष नराणो मंमपनें तलें रे ॥ ईइ धनुषथी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाछो वले रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें रे, कवयो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप गामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अंगारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौडाधिप हसतो रे, आव्यो धसमसतो रे, ते तो दरिउ खिसतो धनुष उपाडतो रे ॥ हूंतो ए रसिउ रे, पण देवें मुसिउ रे, इंम नृपगण हसियो ताली पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं खामी वज्र करतो अडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंकोरे तिम जांखो पडे रे॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई वेगा पूठें रे, केई शरनी मूठें छेदे थंभने रे ॥ पण थंभ न छेदो रे, नृप टोलो खे द्यो रे, निज दर्प उच्छेद्यो वज्र आरंजीनें रे ॥ ७ ॥ मरडक मूगाला रे, लाज्या नूपाला रे, करता ढकचा ला निंदे आप आपनें रे ॥ माटी पण मूक्या रे, सुजनुं वज्र चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चापनें रे ॥ ८ ॥ वीरधवज्ज विमासे रे, कुमरी सवि लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह बज्ज ते तेहवे रे, थंभ पासें एहवे रे, आव्यो धसि के हवे वीणा साजशुं रे ॥ ९ ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे,मूक्या रीजावी जण तंती रसें रे॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति जाडी रे, परणीश हुं लाडी मुज बज्जने वशें रे ॥१०॥ गांधर्व ए धीगो रे, एहने विधि रुगो रे,नहीं छे इंहा मीगो खावो जीलनो रे ॥ इंम कही नृप हसता रे, मदमजशुं सुसता रे, र हेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥११॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे,टंकारव कीधो रे,जाणे मद पीधो नृ

प गण छोटव्यो रे ॥ शर चाढो खंचें रे,नाखे परपंचें रे,खीलीनें संचे चांनो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट च पढिर्ड रे,माचे जे जडिर्ड रे,अलगो जई पडिउं बाणे आहणो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखंम कपूरें रे,कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहडी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठवी वमणी चढी रे ॥ १४ ॥ वीडो कर मावे रे,जिमणे कर गावे रे,वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे॥ दीपे द्युति नारी रे,जिम रतिपति नारी रे, जाणे नागकुमारी थंनमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेटी किम कावें रे, क्यारें किणे ठावें रे,पूछे इति पावें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शकें रे,कन्या कहे विगतें रे,जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे,राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां चूंनो रे, एहने वर रूडो रे,आलोचीने ऊंमो चित्त देवी तियें रे ॥१७॥ नृपतिना वारु रे,बल परखण सारू रे,रचियो ए वारु थंनो कावनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर गावनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूडे रे, मणि लोव

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं खामी वज करतो अडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते ताशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंकोरे तिम जाखो पडे रे॥ ६ ॥ केता नवी कडे रे, केई वेगा पूठें रे, केई शरनी मूठें भेदे थंजनें रे ॥ पण थंन न भेद्यो रे, नृप टोलो खे द्यो रे, निज दर्प्प उछेद्यो वज आरंजीनें रे ॥ ७ ॥ मरडक मूछाला रे, लाज्या जूपाला रे, करता ढकचा ला निंदे आप आपनें रे ॥ माटी पण मूक्या रे, छुजलुं वज चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चापनें रे ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सवि लासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ मह वल ते तेहवे रे, थंन पासें एहवे रे, आव्यो धसि के हवे वीणा साजशुं रे ॥ ९ ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे,मूक्या रीजावी जण तंती रसें रे॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति ञाडी रे, परणीश हुं लाडी मुज वलने वशें रे ॥१०॥ गांधर्व ए धीगो रे, एहने विधि रुगो रे,नहीं छे इंहा मीगो खावो नीखनो रे ॥ इंम कही नृप हसता रे, महवलशुं सुसता रे, र हेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥११॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे,टंकारव कीधो रे,जाणे मद पीधो नृ

प गण लोटयो रे॥ हार चाढी खंचें रे,नाखे परगंचें
रे,खोलीनें संचे घालो घोटयो रे ॥ १२ ॥ संपुट त्र
घडित रे,माचे ले जडित रे,अलगो लई पडिल चाणे
आव्यो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे,
प्रगटी मनोहारी वेश नवो वन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं
म कपूरें रे,कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहडी
रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोभा धारें रे, श्रीपुंजने
शारें ठवी वमणी चढी रे ॥ १४ ॥ वीडो कर कावे
रे,लिमणो कर ठावे रे,वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे॥
दीपे द्युति नारी रे,जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना
गकुमारी थंभमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें
रे, प्यारें किणे ठावें रे,पूछे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें
रे ॥ जीवी जस शकें रे,कन्या कहे तिगनें रे,जाणे मे
जुगतें कुलदेवी मनें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में नूंगें रे,
नाली ते गूंपे रे,राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥
वरसोमां नूंतो रे, एहने वर कहो रे,आलोचीने
चित देवी तिपे रे ॥ १७ ॥ नृपतिना चारु रे,घर परम
साम रे,रचियो ए चारु थंभो कावनो रे ॥ कनका
लीधो रे, श्रीहार प्रतिज्ञा रे, तुजने तेणे दीधो
गावनो रे ॥ १८ ॥ चिंतित अति कहे रे, नलि

न पूछे रे,तेणी बाजुडे कोमळ बाहडी रे ॥ कुळदेवी तुवारी रे, वरमाळा धारी रे, थंभ मांहिं उतारी तुं अमने जडी रे ॥ १९ ॥ दुःखडुं मुज नातुं रे,कारज षणुं कातुं रे.पण लागे ए मातुं जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंभ उघाडयो रे, नृप गर्व लताडयो रे,गंधर्व दे खाडयो ते नाग्यं यही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवारें रे, नृपति दुःख वारें रे. महाबल तेणि वारें मुख टांकी हुने रे ॥ थांभाथी निकसी रे,कुंमरी कहे विकसी रे, नाव्यो थंभ वकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखाडे प्रकाशें रे, धाई मात उलासें रे, कनो थंभ पासें श्लोक ते गोववे रे ॥ नृपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाळा रे,महबलनें विशाला कंठें लोववे रे ॥ २२ ॥ महाबल वर वरीउ रे, नाग्यं अति नरीउ रे,रतिपति अवतरीउ रूप समाजशुं रे॥ बीजे खंमें दाखी रे,ढाल तेरमी नांखीरे,लेजो रस चाखी कांतिकहे ईश्शुरे॥ २३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धडहड्या, बोले विषम वचन्न ॥ जुउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ठांमी आदर्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जिसी पात्री हुवे,ए वखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाघ्यो जेहने हार्था हेठ, तेह खीर्ये नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हूउं मिल ते नररयण ॥ मो०॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम लार्गे पायो गजगेल ॥मो०॥आ०॥६॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, जोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं गा य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते नरलोज, पवन परें न लहे किहां थोज ॥ मो० ॥ चंपकमाला सार्थे नृप, जुंजे जोजन सरस अनूप ॥मो०॥आ०॥ए॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥मो०॥ समराव्या जल छांटया सेर, शणगारी नगरी चोफेर ॥मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे वताव्या सुर आवास ॥मो०॥

कृष्णागिरना ध्रुम धूमंत, आकाशें घन अड गमंत ॥ सो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ तोरण माला नार उमान. घर घर वन्दो नवन प्रमान ॥ सो० ॥ घाल गोट घाटमी तान.कांति कहे सूणी नवल ममान ॥ सो० ॥ आ० ॥ १० ॥

पणेजी ॥ सुरतरु मोहन वेली, सरिखां दीसे बिहुं नि रूपणेजी ॥ १ ॥ वाजे मंगल भेरि, ताल कंसाल न फेरी नादशुंजी ॥ शणगाखा गजराज, आगल चाले अति उनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह रते केसरीये वावे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोड, श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल क बनाय, तंदुल चार्ले चोढया उजलाजी ॥ परवरिया घमताय, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥ मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी॥ नट नचे जयमाल, सोहला गाया सरखें गोरीयें जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण जणते वेद, पंचामृतना होम तिहां कीधाजी ॥ चारे चोरी थंभ, दीपे जिम पुरुषारथ बांटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना नेहडा बांध, चारे फेरे मंगल वरतीयांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसार तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय, पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप राणी आशीर, वचन इस्यो अति हेजें उच्चर्योजी ॥८॥ चंद्रिका चंद समान, अविचल होजो तुमची जोड लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडी, करमोचन वेलायें वे चलीजी ॥९॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

पधरावियाजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दे सह्
राजी कियाजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोडि, मलती
जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपतिना
चकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनी
श, पूछे त्यां माहावलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे गा
म, लगन समय आव्या किण नांतशुंजी ॥ १२ ॥
कुमर नणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणी
ठेजी ॥ नृप कहे सयलुं साच, कुलदेवी निपजावे जा
णीठेजी ॥ १३ ॥ वली माहावल कहे एम, शीख क
रो तो चालुं घर नणीजी ॥ मुज विरहे मा तात, कर
तां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ चार पहोरमां
जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा क
रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥
पडवेने दिन सूर, काया पहेलो जो जाई मलुंजी ॥
जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी
॥१६॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आ
कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गु
ण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवी
ठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम,
पढखोजी बोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करवतियां धर काटण कोरडीजी ॥ संप्रेडी श ततकाल, असवारी मनधारी ए वडीजी ॥ १९ ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी वोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इंमद्विज करतां ए बनेजी ॥२०॥ इंम कही कवचो नूप, बीजे खंमें सरस सोहा मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे नणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी लाज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रत्नसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोडी विन्हे, पूछे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन संशय आकले, कहो सुनग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीशवासणी छे स्वामी ॥ सुखें कहो शंका तजी, एह मुज जामणि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुइका, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ नांखीने दिन अपर नुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ ढाल सांलमी ॥ सखीरी आयो चन्द्राळो
अटारडो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, मृ
पची मांही प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांनळो ॥ पियारी मंत्र
साधन मिश नीकळ्यो, नीकळ्यो नृप कनें लेई लंच ॥
मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते इव्यें सूतारना ॥ सू० ॥ उपक
रण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥
ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥
सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥
पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घडी
अनिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली ठानी तेहमां,
ते० ॥ वेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साज संचें
मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥
पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत
मंजूर ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥
ते पुर चोरी इंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री
गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥
जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उनो रह्यो करी शान
॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥
ते अति लोचने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताहुं नांजी

नवि थाकुं ॥न०॥ तुं मुज खोली थाप ॥ मृ०॥ ७ ॥ पि० ॥ तुरत उवाडी में दीयो ॥में०॥ लीयो तिणे स वि माल ॥मृ०॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥पो०॥ इव्यतणी लोनाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु जने ईम कहे ॥ई०॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ०॥पि०॥ जावंतो हवे चोर ते ॥चो०॥ के नृप जन करे पूंठ ॥ मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥मू०॥ थरके तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त णुं ॥जी०॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि०॥ पद्मशिला ते नवननी ॥ ते० ॥ में उवाडी खांच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ते०॥ घाल्यो उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर ते ठवी ॥ते०॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ तरतां अंगण तलें ॥अं०॥ दीठो वडतरु जांख ॥ मृ० ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वड ऊपर चढयो ॥ऊ०॥ रहुं जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि०॥ दीठो वडनी कूखमां ॥कू०॥ नूपण वसननो थाट ॥मृ०॥ १३॥पि०॥ अपह रि लीधा देवीयें ॥दे०॥ पहेलो मुज समुदाय ॥मृ०॥ ॥पि०॥ ते तिण ठामां गोपव्यां ॥गो०॥ दीसे ठे.ए प्राय ०॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते उलखी ॥ उ०॥

॥ मृ० ॥ वि० ॥ कपट चाटें आ तरखुं देशो सुझ ॥ मृ० ॥ वि० ॥ कपट चाटें आ वती ॥ का० ॥ नजरें पडी तुं मुझ ॥ मृ० ॥ १५ ॥ वि० ॥ वडतरुथी हुं कतरयो ॥ हुं० ॥ लाहामो आ व्यो दोड ॥मृ०॥ पिपारि वेहुं मल्यां ए माहरी ॥मा०॥ वात फली वन गेड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ वि० ॥ बीजे खंमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥ मृ० ॥ वि०॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जणे में जुगतिशुं, जांण्यो मुज विरतंत ॥ तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥ पुरुष वे ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वे प मगयासदन, पुंठुं पग पग ठांहिं ॥ २ ॥ घर न मली पुरमां जमी, किहांई न दीठी लाम ॥ बेठी देव ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके फांकडे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूछ्या थकी, बो ली करती रीग ॥ अहो सुगुण मुज पाठले, वलगो छे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूठें पड्यो, लंघावे छे मुझ ॥ क्षण क्षण थइ विरुठ नडे, गूमड जेम अरु .

क ॥६॥ निःकारण मुजनें इंणे,नोडी संकट मांहि ॥
वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥७॥
॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥
गतदिन बेठी हो राज,मंदिर बारें राज, धूरत त्यां रें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इंमतो नं जाण्यो रे धूतारो जन एह छे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी मा हारी रे इंणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज, मनमां वारु राज,जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतर्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं छे राज, नोजन न करुं रे कांइक मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीत पटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम नं नांखे हो राज, कांइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूठें माहरे ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुजनें लंघावे राज, जावा नं दीये रे क्यांहिं फीटयो बाहिरें ॥ ९ ॥ तब में विचा र्युं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगडो निवेडो रें बेसाने छोडवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणिधर मद्दोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगडतां ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक वीते राज, मगधा हसतीरे जांखे एह ठे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज दे णाथी रे कीधो माहारे त्रूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विषधर मंक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरे वारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाउ माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंमे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे भांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हार रही में तेहने, आप्यो इंम उच्चाट ॥ तुज घर नृपदेषी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इंम सु णी ते विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणो ठे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मां बापडी, मुजने इंम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहे ता किहां, कहुं हुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां लुपाडुं

तुम थकी, न रहे छानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ वने कपट करवो ति हां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा लाख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पातुं पडयुं, तेतो पूरव नो ग ॥ गले ग्रहीनें काढया,हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी भली ॥ ए देशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणि हा हो राज,चरित्र सुणो एहवी नारीना ॥ कपट करी ने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ वलती जेहवी गामरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज परथी काढो परी, करीनें कांईक टूण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारधीयां होये सारथी, सारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधा नें कहुं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो वेढमां, जाण्यो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं कादण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणिकायें अति आदरें,भोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें ज्ञरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ जोग जणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में जाख्युं तेहने ईस्युं, मुज वालो ठे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारिनो, मनमथ रूपें ठेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ पण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काल्ले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति किहां नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी तुमें, आव्यां कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं विहुं ऋजी अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, जांखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करतां रातडी. वीती थयो परजात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूठयुं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रजातें ताई ॥ ना० ॥ ठे तुज पासें के नहीं, आ

नरगादिक कांई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तद गुरुने देखाडीयां, आनूषण तेणे काढि ॥ना०॥ हगतां में कहुं पोहलो, ते कहे इण रस चाढ ॥ ना० ॥ च० ॥ १५॥ हार अने माहारे गलो, नामें ज्ञायमीपुंज ॥ ना० ॥ गुन धणो ते कालतो, आवे छे सुल पुंज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पुठ्युं ते क्यां थयो, ते कहे पहुंटा माहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासे वडो, कीर्ति थंन छे त्याहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचे भंडारीयो, ते हमा गुरुयो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जाया वातरें, मर तो हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जाई तिहां, आणीश तेह उपाय ॥ ना० ॥ जाई थाके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ १९ ॥ नहीं तो लाजे मुजने, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो पणो, मोहोमाहें रस दो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालपकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमी, कांतें भणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥दोहा॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती छे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अहलील ॥ १ ॥ सं

च कह्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंता पण रा तमां, जाशे कनका कठ ॥ २ ॥ सामग्री जोजन तणी, करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, गई दिवसने छेह ॥ ३ ॥ ठाना थानक थंभनो, जोतां न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई नांख्यो सुविचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी जवन मजार ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आठे लाल ॥ अध मारगें जूली पडी ॥ आफलती पुर सेर, खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटडी ॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, नांखी वात प्रकाश, आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह, आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥ वात सुणी ईम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥ प्रीति वचन ते वछप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एहथी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही यें ठाना छिप्या ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥ आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कांइ सोर, वेगा छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय तु

न करें ॥ ४ ॥ राखुं बिराडी क्यांहिं,तव ते आपे त्यां हिं, आ० ॥ वगचो हाथें उचकी, मैं तेहमांथी टा लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कं चूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक निजा य, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धखो ॥ में कह्युं तेहने ए म, धरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक में ताहरें कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय,त्यां लगें ते न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते जणी ॥ पेठी ते निर्जीक, में धारी मन ठीक, आ० ॥ ताळुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण बे अति ढुंम, उपाडीने मंजूष, आ० ॥ गोला मां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाह्यो नीर वि चाल, आ० ॥ करतागुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पि व ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहज नुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ए ॥ पहेख्यां कुंम ल खास, रविशशी मंमल जास, आ० ॥ लाया जे वडने घडें ॥ पहेख्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मां हि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज मवि शीलवी ॥ निसुणे वीणा पोर, तव ए खीजी चोर,

श्रा० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही बी
जुं खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, श्रा० ॥ तेहमां वसी खी
ली जडी ॥ राख्या पवनना माग, नीचें ढानें लाग,
श्रा०॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
कहो आगें अवदात, श्रा०॥ में न लह्या तिहां संक
मी ॥ बीजे खंभे एह, कांति कहे धरी नेह, श्रा० ॥
ढाल नणी ठंगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल मानिनी सुणो, आगें जे हुई वा
त ॥ पंच तिस्यो में चीतरयो, जिम जाणो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे कणखा, ते वाह्या जलपूर ॥
एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तत
शानें बोलावता, कीधा आदर इठ ॥३॥ मुज पूछे मंजू
शगुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीडुं में देई आदरें, कह्युं
एम तिण ठोर ॥४॥ पंच एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥५॥
॥ ढाल बीशमी ॥ पें तोनें आपा ठलगुं,ठलगाणाजी ॥
जिरमट खाश्यो गाल नल्या ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नमें

मह्या नाग्यथकी ॥ काम करे छुं ए वही ॥ थजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाड न कोइ इहां ॥ कहोतो काठी दीजीयें ॥ ऊ० ॥ जीव सरखो काज जिहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारिखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय डुःख पणो ॥ पोतावटीठुं पारिखुं ॥ ऊ० ॥ लहीयें थयें सरे वमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठा ॥ गु०॥ धन दाटी तेह तिंधु तडें ॥ ठपाडे मजी सामटा ॥ व० ॥ धंन तिहांथी एक धटें ॥ ४ ॥ ते पूठें हुं थाजियो ॥ गु० ॥ पूरव पोत समीप गया ॥ वंठित धन देखाडियो ॥ व०॥ ते तिहां मूकी निचिंत थयां ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ वेखाडुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ व०॥ धन लोजें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ वत्तर फुंडुं एम कसुं ॥ लोज वशें तेणें चोरटे ॥ ऊ०॥ तासुं कपाडी द्रव्य मसुं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ व० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दी ग में सपली परें ॥ गु० ॥ पासें कजे चरित्त पणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ ऊ० ॥ साच चरित ए चोर त

णो ॥ ए ॥ रातिरूपी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो नूमि कीती ॥ देशुं वड जंजीरमां ॥ ज० ॥ मदिशुं करशे जेय पिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ थशे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ज० ॥ लेशो फल रस पाक पशे ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यतन करी में एकले ॥ ज० ॥ राख्यो थंन प्रनात लगें ॥ १२ ॥ प्रहकालें जण नृपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरखण थंन तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो ॥ ज० ॥ वेगो आवी ठे नृप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल नणें ॥ काढुं चोर ते सवैथा ॥ ज० ॥ शिखर ठव्यो जे नुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें नीड पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ ज० ॥ इणे फिकरें मुज चित्त नड्यो ॥ १५ ॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवीश तेहनो खूज करी ॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥ ज० ॥ साथें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चित्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम नणे ॥ जो नृप आवे तुरतमां ॥ ज० ॥ तो कहेजो इंम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

॥ढाल एकवीशमी॥ धिग धिग धणनी प्रीतडी॥ए देशी॥

॥ नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह रे ॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नृपति त्रटकीने कहे रे, कुण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं रे, थयुं होशे रे कोइ विपरिय रूप ॥ नृ० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नृ० ॥ ३ ॥ अथवा देवें बेहुनो, संयोग इंम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, वेखाडी रे किम जडपी लीध ॥ नृ० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूजथकी परगट करी, कयां पाडयो रे एह माहारी द्रष्ट ॥ नृ० ॥ ॥ ५ ॥ नवि दीधुं भोजन नवुं, नहीं दीधुं लीध व दालि ॥ मणि हीणुं भूषण नवुं,पण पडिउं रे जश मणि ते टालि ॥ नृ० ॥ ६ ॥ हत्या दुष्ट किण वैरीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपहर्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नृ० ॥ ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काज

जाती कोर ॥ नू० ॥ ८ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, भ्रांति मुज मन थाति ॥ मरण थकी वारी गयां, करु पाणी रे केइ अथवा विचाति ॥ नू० ॥ ९ ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीड ॥ इंम कहेतो गलहथ करी, नृप बेठो रे पडयो चिंता चीड ॥ नू०॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ नू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, वल वेतर्या ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संनिधियें रे हरि या किणें देव ॥ नू० ॥ १२ ॥ देशांतर पुर पर्वतें, वनभूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो रावो रे तनी अपर किलेश ॥ नू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कहे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ नू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह लयन जणावो वात ॥ तेपण खवर करे वली, करतां इंम रे सांव था वशे धात ॥ नू० ॥ १५ ॥ नडुं नडुं नृपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रे नरपति सज थाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली नली होला ल ॥ सांजलजो अवधूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ नूत वडो कहे वातडी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २ ॥ पु हवी गण नरिंदनो रे, माहाबल नामे कुमार रे॥मो०॥ बे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे, तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख पणें लीयो हो लाल, माय करे डुःख नार रे ॥मो०॥ ॥ नू० ॥ ४ ॥ इंम पण बांध्यो आकरो रे, वालण हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निर धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल, तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ६ ॥ ख वर नहीं बे कुमरनो रे, हार केहें गयो कव रे ॥मो०॥ पंचम दिन काले हुशे हो लाल, सूरज कग्या पूर्व रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे, मलवा डुर्जन वेह रे ॥ मो० ॥ ते डुःख मरवुं आ

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ चूत गयो तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन चूमिनो रे, परिचित तरुनो वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमरें निहाली उलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १७ ॥ कुमर जणे मलया जणी रे, दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड कपटडी हो लाल, आव्यो पुहवीगाण रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली कडशे हो लाल, तो फर स्यों श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसखां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन ने ढूकडूं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ ॥ २० ॥ कपडतो गयणांगणें रे, देखे वड वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए द्रुमां वसी रे, तो जातां किए थान रे ॥ मो० ॥ पडतां विषमी ओलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ चू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर प

देशी ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो
लाल, वाधे सुजश विशाल रे॥ मो० ॥ न्रू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया
पणे नयणों नरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश
हु वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इंम कही नर
रूपे त्रिया, तिहां थवि चाल्यो नरेश ॥२॥ निरखत पिसु
नी वाटडी, शूने रंनाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाघी
दुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां क
मल विवोध ॥ वंधनयरथी वद्द जिम, छूटा अलिकुल
योध ॥४॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो वालो सूर॥
आलें किरणजालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ रूपचान सुदनें गई दूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं प्रमा करारें ॥
माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो कुण धामें
॥ १ ॥ चाही इंम चाल्ली चुंपें, आवी वही पुरनी खुंपें ॥
पेसे जब पुरनें दुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥
दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धम
क्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लो
चन घापे ॥३॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे तस

रूप प्रकाशी ॥ कुंमजने डकूलनी फाली, उजलर्यो म
हबलनां नाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाध्यां,
आनूषण कुमरनां वाधां ॥ इंम कही नृप पासें लाव्यो,
देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष
ए नवलो, सोहे नूपणें करी नांतीलो ॥ मुज सुतनां
पहिरयां दीसे, आनूपण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क
हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूब्यो पण
उत्तर नापे, पुबो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नूपति
कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥
मलया मनमांहि विमासे, साचुं इहां जूठुं नासे ।
॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सईहशे नहीं
प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीडा पाखें, नावी मटशे नहीं
लाखें ॥ ए ॥ इंम धारीने मलया बोले, महबल हु
ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते
णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे
सा कहे इहांहिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जं
इहां आवे,मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठीतहि
वात प्रकाशी, चोकस न पडी विण रासी ॥ महबल
थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥
इत्यादिक वचन सुणीनें,रही मौन धरी मन हीने ॥ त्रं

देवे अवधारो ॥१३॥

पो नरपति हुंकारी, एह वात देवे अवधारो ॥ ...
ग्रहीनां सुत नंदनना, वसनादिक लीधां तनना ॥
सोनसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर गोरें ॥
॥ १४ ॥ चोख्यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे
हवाल ॥ कान्ने तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे
ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सुधि लेवा
ग्राव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इंणे पुरमां
कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीने इणें मलीनें,
मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ सोनसार कन्हें जई हणजो,
इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥१७॥ मलया मनमां ई
म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद
मोटी, दीसे ते इहां वली खोटी ॥१८॥ चिंतवती पूर्व
सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सचि
व विचारी, महाराज सुणो अवधारो ॥ १९ ॥ जिम
साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ
चरणा दीसे रूडी, शिर आवी तो मति कूडी॥ २० ॥
इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥
इम करी हणशो तो आठे, कोई दोष न देशे पाछे
॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज बतावो, तव ते कहे सर्प
मंगावो ॥ साचो घट सर्पनो धीजें, होशे तो चरण न

मीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुडविद अविलंबें, मूके तव शैल अलंबें ॥ कुंदर विषधर आणेवा, गया हलता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंफल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांभलजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोड ॥ गजगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोड ॥१॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन छे आज ॥ नेह अनिष्ट ईहां किस्युं, दीसे छे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन दुर्लभ हुवे, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबाथी पडी, करशुं ते दुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित विनमा धरी, करो आप हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पभणे अवगर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ छंबखडानी देशी ॥

मुज वचनें इम चालजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

हुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वसन आवि यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो छल खेल ॥ स० ॥ कुंम ल वसन लीधां तिकें रे, ते आव्यां इणि वेल ॥ स० ॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु द्ध ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर सार्थे सुद्ध ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो रे, वींटयो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप तिनें कहे गारुडी रे, देव अलंबा हेत ॥ स० ॥ वि वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेत ॥ स० ॥ १४ ॥ फूंकारे तरु बालतो रे, कालो काजल वान ॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंभमां रे, घाल्यो आणी निदा न ॥ स० ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे नर कुंभ ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुभटें करी संरंभ ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनुं रे, कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम रूपवी रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंद्र अंगारा लो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

[illegible] मन न नहंत ॥ म० ॥
दिव्य कनित न पहनें है रेनो मन न नहंत ॥म०॥
दोय नहि नवि नाग है, गुणहीं गुण नहंत ॥म०॥
॥१०॥ समयसू यो वानो गहे है नाये सुजश मुनाग॥म०॥
जाय सुवर्ण दुनागनें है, नाव्यो ते गुण नाग ॥ म०
॥ ११ ॥ नगरना विनना निहां है, जपनी मन नव
कार ॥ म० । [illegible] [illegible] है, उघाडे पट
[illegible] म० [illegible] ॥ [illegible] प्रगटो है, त्रि
[illegible] ॥ म० । [illegible] नाग्यो भवनिज
[illegible] ॥ म० । [illegible] म० ॥ १२ ॥ नाग
[illegible] [illegible] निरधन [illegible] । म० ॥
[illegible] [illegible] [illegible] वहन निहाग म० ॥
[illegible] [illegible] [illegible] ननकान ॥म० १३॥
[illegible] [illegible] [illegible] नम कनान ॥ म० ॥
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ म० ॥ १४ ॥
[illegible]

॥ [illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] सुनयो [illegible] ॥ ने
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ १ ॥ ने नि[illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] पि
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ नान [illegible]
[illegible]

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु णी हुई, तव ते मूल स्वनाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि मंमली, रह्यो उपर धरी ब्रत्र ॥ जोतां जण अदेत र स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे वागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ घर घरतो नरराजीयो, नणे एहवी वाचा लो ॥अहो न०॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥अ०॥देखी० ॥१॥ पुरजण देवी वारता,अनरथ उगाड्यो लो॥अ०॥ नरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥अ०॥दे० ॥ २ ॥ नहिं सामान्य नुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो ॥अ०॥ निरखत रचना एहनी, रही मनडे खूंपी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए वे जणां, दा की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उदेशथी, आव्यां कोई ठानां लो ॥अ०॥दे०॥४॥ परमारथ लहे तो नथी, आराधी वेहुनें लो ॥ अ० ॥ नगतें सूधां रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥ इंम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥ ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इंम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग ग्रह्य,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ जे॑ वश होय वेव
ता, ईम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥अ०॥
नृप पयपात्र धणुं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशें लो ॥ अ० ॥ गारुडीयें पाछो ग्रह्यो, मूक्यो गिरि
देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें,
जोतां जण पासें लो ॥अ०॥ नरथी नारी किम हूई,
एह कौतुक नासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुण
जे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे,मूल रूप ए व
लट्युं लो ॥ अ० ॥ नाल अमृतथी मोलतां, पहेलुं
पण उलट्युं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विप
हर चाटतां, कहो किम वदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीयु करतणो, अवरिज इहां जाणुं लो ॥अ०॥
॥दे०॥१३॥ कारण ए मुज पीउनां,विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पडती नथी,

थ्यो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी,जीवितथी प्यारी लो ॥अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो थाई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुर्ठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥ अ० ॥ सुखशानाशुं राख जो, वंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंमनी, ढाल नांखी कांतें लो ॥अ०॥दे०॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण नामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउं, लायो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख अंगें साहसी, पूखो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचण सु

ी राणी हूई, दुःख-नारें दिलगार ॥ आतम...
रवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ साहू काठा हे गहुं पी साथ, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें हे इं णिपरें ॥ सुत नायो घरें ॥ पीया विरहो हे अति खट कंत, सुतनो हे हीयडा नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया मुजथी हे रहुं न जाय, लेखा दीहा किम नीगमुं ॥ सु० ॥ पीया रयणि हे वेरणी थाय, नींद गई शूनो भमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया वालुं हे नवलख हार, पु त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन उदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु०॥ ३ ॥ पीया ढोव्युं हे सरस पीयूर, छार उदकने कारणें ॥सु०॥ पीया कापी हे सुरतरु कंद, वाव्यो धंतुरो वारणे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित दोनागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे कंगावीश जेम, निवृत्त होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री या जेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आपणुं ॥

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे ईम आसास, पुत्र विनो दी हे गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवास, मन बींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पोढोता हे निज निज थान,लोक जवां अचरिज चिंते ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने विरह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया वोली हे तपतां दीत,राति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख जगदीश, के जस वीते ते कहे ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया आया हे जन परभात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥ सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पडवा हे वीली हाम, नृप राणी ऊंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे नरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वड मालियें ॥ सुत पायो वडें ॥ प्रीया टांग्यो हे वायु ली जेम, महवल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये) सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ मुख जिण वडे ॥ सु० ॥ प्रीया नीडत्पे हे माल र, तुम नंदन तिहां तडफडे ॥ सु० ॥ प्री आव्यो हे नहीं परमार्थ ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे ईम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्म य हर्षे, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि. चाल्यो नृप वड सनमु खें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्री तमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वडतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संभाल, नवली विधि नृ प आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कां तें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें नूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोन सार टांग्यो वडे, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तु ज दुर्दशा, गयो सुद्धि हुं नूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रभुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अ नुनवी, दोहिलिम दुःख समाज ॥३॥ ईम कही तेड्यो वर्द्धकी, ठेदावी वड माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

फाटे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीडित तनु, सींजे शीतल चाप ॥ चेत वली वेगे हुई, बोलाव्यो तब माप ॥ ५ ॥

॥ ढाल वठी ॥ मारगडामां जोवुंजी,
थावे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जोखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अभिलापेंजी ॥नं०॥ किहां विचख्यो श्रम पासें जी ॥ नं० ॥ वांध्यो किण वडसाखेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख दुःख तें किहां किहां लाधुं, करते हार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० ॥ वां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण कपाडीजी ॥ नं० ॥ वेगी श्रागल माडीजी ॥ नं० ॥ पूर्वे मलया लाडीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ नि० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥नं०॥ गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं वेगो तस वासें जी ॥ नं० ॥ कह्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ ईम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥नं०॥ तुम वहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहि ॥ रो० ॥ ४ ॥ आ
गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी
॥नं०॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर
ठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने सांहमो आवी, आ
ठोजी वडभाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी
। नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक
नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी कानूं वाधुंजी ॥ नं० ॥
उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होवे कुशलें सिद्ध ॥नं०
॥ ६ ॥ मन उपगार धरीनेंजी ॥नं०॥ न शक्यो बोली
फरीनेंजी ॥नं०॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥नं०॥ हाथें
खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर
तो कोडी यतन ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी
जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे छे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां छे
वडतरु भारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥
नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग
॥क०॥८॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ वय स
ढग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ वनें रही जब न्हाल्यो
जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर
तलें निरखे स्वर रोती, दीठी तिहां एकनारि ॥व०॥९॥
में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

नकटो मरती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥नं०॥ किण न गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते था गें; चाख्युं सघलुं साच ॥ नं० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर विश्वासीजी ॥ नं० ॥ वोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥ सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रूला सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं द्रव्य गुफामां, देखा डीश तुम आय ॥ सु० ॥ २२ ॥ ईम कही ते पर चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वड मालीजी ॥ नं० ॥ ठोडयो चोर संभालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो ना लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण साखें, बांध्यो तिमहीज वीर ॥ ई० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाला जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ ठोडी मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड माला जी ॥ नं० ॥ बंधन ठोडी केश ग्रहीनें, कतरियो व ली हेव ॥ मं० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं० ॥ अक्षत शव परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनें दीधुं जी ॥ नं० ॥ ईम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ त्रीजे खंमें ढाल ए ठठी, कांतें कही रस रेल ॥खं०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां [illegible] नवि दूर ॥ अद्भुत भय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत मदवल कहो मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंमल गाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंम दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत नज वलनें, पडे न पावक कुंम ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंम ॥ ४ ॥ तेहवे शव गय णांगणें, वडयो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज जई, वडशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कां एक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज्ज वसें साधन तणी, आशें वहेली सिद्ध ॥ रह्यो सुनग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी मरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥८॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, ए हवो एक इण वाम ॥ नं०॥ १ ॥ मुज संगें जो वे-

शो रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे शो नोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्राण पियाणुं माहरे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥ तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं०॥३॥ जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥ नं० ॥ ईम धारी मुखमां ठवी रे,कथन थयुं में तेथ ॥ नं० ॥ ४ ॥ ताममूली पसी योगीयें रे, मंत्री तिलक मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रनावें हुं थयो रे,पन्नग विष आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे, आप गयो कोइ काम ॥नं०॥ पवन नखी मुखमां रहुं रे, गनो विलने गम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां गारुडी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें वश करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष पुवनमां मूकीयो रे, कुंन करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम आदेशें जे नरें रे, काढयो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८ ॥ तेहने तुरतज उंजखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं० ॥ कंठें धखो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥ ॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥ ॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष माग ॥ नं० ॥ १० ॥ नृप कहे ते किम हूठ रे, जो

ता नारी सांग ॥ नं० ॥ मद्दबल नाखे ताततें रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जाती नारी पावलें रे, गु टिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं क र मह्यो रे, बीज समय इंणे वाल ॥ नं० ॥ नाल ति लक चाट्युं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृ प प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचर्युं रे, अणघटतुं प्र तिकूल ॥ नं० ॥ लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सर जित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, वेसारी उत्संग ॥नं०॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं० ॥ १६ ॥ अथवा तें जा एयुं कर्युं रे, वात न खाती पाड ॥ नं०॥ विण अवस र जे नांखियें रे, न चढे तेह तिराड ॥ नं०॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे,नांखि न एका टोक ॥नं०॥ ए विरतंत कही जनो रे, मानत नहिं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कर्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० ॥ अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कु ल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इंम कहेती नृपनी प्रिया

रे, जे जीवितनी थाय ॥ नं० ॥ थानूपण माणि ते हती रे, थापे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे ए में सातमी रे,ए थई थनुपम ढाल ॥नं०॥ कांति कहे सुणतां सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे,रहेतां शैल थलंब ॥ कारण शुं शुं थनुजव्यां, कहीयें ते थविलंब ॥ १ ॥ पवन जखत गिरि कंदरें, निर्गत हुठ दिनेश ॥ रजनी समय साधक थसी, थाव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना छुग्धथी, परखुं जाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप द्दग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ थावो कुमर कला निज्ञा, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुंम तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें बहपकी, थाणी दीवं शव फेरि ॥ बेठो जपवा तेह तव, हुं पण बेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल थावमी ॥ हरिहां सुहानी साहेब मेरा वे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी,थाहूति दे थवसान॥ तिम तिम शव कपडी पडे,तडफडतुं शोप निदान ॥ द : योगिणी थाई वे, थरिहां रीस जराई वे ॥१॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां ममरू
माक ॥ वीर वावन आगें चले, पाढंता पोढी हाक
॥ ह० ॥ २ ॥ अम्बरथकी उहूनट उतरती, शक्ति फ
हे रे धीव ॥ मृतक अशुरु आणी किस्युं कुं, तेढी कां
नृपीव ॥ ह० ॥ ३ ॥ ईम कहेती योगीनें साही,नाखे
अगनिनें कुंन ॥ नागपाशने बंधने मुज, वे कर वांध्या
प्रचंन ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी
ले कुण पाप ॥ ईम कहेती नन मारगें, विहुं पग
ग्रही उडी आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हुं प
ग जीडी, उंचा पग शिर हेव ॥ टांगी मुजनें ए वडें,
वढी गई सेती कुलेव ॥ ह० ॥ ६ ॥ शव ते तिमहिज
उढी तिहांथी, चलयुं गुंफाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं
वली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक
कहे दीसे वे घाधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे
सुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुरु ॥ ह० ॥ ८ ॥
लोक कहे ईम कहिजतां राजा, जोवरावे नण पास ॥
दीगो वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास
॥ ह० ॥ ९ ॥ एमें साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे ईं
न खेद ॥ नृप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम उमेद
ह०॥ १०॥ नृप कहे केम करथी तूटया, वांध्या वि

पधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठडुं, मुज मुखमां आव्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ कोध जरी चाव्युं में तेहथी, पीडयो पन्नग जोर ॥ नमें थई हेगे पडयो, न चढयुं विष मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढया, दुःखमां में विललात ॥ संकट सह्ु टलियां हवे, मलतां क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तुम आगल पूरी पक्ष ॥ ह० ॥ १४ ॥ लोक प्रशंसे शिर धुणंतां, अहो हो अतुल बल वीर ॥ थोडा काल मांहें घणी, जल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट जलराशिनो, तारु एक तुंहिज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अहो साहस निर्नेय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥ उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अमनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इंम वर्णन गुणमति नेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नृप कहे नंदन मंमल ते, देखाडो ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीउ, देखाडे जईने त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उलर्षे, निरखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलदलतो रंग ॥ ह० ॥ २० ॥ छेद्यां पण निशिमां ढुं नाथे,शीश विना जस अंग ॥ प्रसी तेह कढावीने, मंमार धम्मो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग नखो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आवमी ढालें, नांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी,लहियें मनवंछित नोग॥ह०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी राण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रकाशी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ नगिनीपति नगिनी विहुं,मेलवियां नृपतेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठा राण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरित्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र नरिज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्पण केलि ॥ नूख तृषा निड्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मऊण नोजन वस्त्रथी, सत्कार्यो नृपनंद ॥ बांध्यो वेहेनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केतार्इक दि

वन तस हुं प्रिया,कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ सोप रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि देशी सुजाने, तरुणो एक उयल्ल ॥ तस संकेत सुरि गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी नय चोरनो, वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुक्तावलीनें कंचुकी,आप हस्त तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस सार्थे मुने, घाली पेटी मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीधं यंत्र भटकांहिं ॥ ॥ ५ ॥ संकेती वीजो तिहां, आव्यो धुरत दोडी ॥ बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अछेह ॥ गुहिर नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहनें ओलखे, जो जना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण किश्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी इस्या, गया करी करतूत ॥ए॥ कुमर कहे हो धूरतें,कीधो अनुचित खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूछे कथा अकेल ॥१०॥

॥ ढाल दशमी ॥ वेडले नार घणो छे राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी,प्रात समय इहां आवी॥

यह धनंजय नयन समीपें, गोला फल गया ॥ १ ॥
साची वात कहां छो राज, जे वीती छे अमनां ॥ तिलज
र जूठ कहुं नहिं मोहन, मलताना संगममां ॥ सा
चो० ॥ ए आंकणी ॥ लोनसार चोरें जलमांथी, काढी
भार गरिष्ठी ॥ ताछुं नांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित
हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंघ विषम कंदरमां,
लेई गयो मुज छाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे
खाडयुं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें भीजी मुज
नीजी, तस संगें मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां
थी इंणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा
प दिशाथी नृपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शि
खर रही में जोतां, मोहन विडंबन साध्यो ॥ सा०॥
॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रहती, तिहां मली हुं
तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे
अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, ईम
सुणी महाबल ऊठे ॥ कहुं तातने तात कुमरशुं, आ
व्यो रथी तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे
हनी तेहनें, दीधी सर्व संभाली ॥ शेष द्रव्य लेई नर
पति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन
आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

पुज सहित मलया त्यां, देखी वेंगी पासें ॥सा०॥९॥
चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती॥ कू
पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वेरणी हुंती॥
॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूछी, रही
वदन निरखंती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाडे, मन
मां ईम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनो
हर महारो, लीधो तो जिण धूर्ते ॥ ए पापणीने आ
पी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु न
हीं के लीधो इहुंणे, खेडी नवलो फंदो॥ हवणां तो ए
हिज मुज वैरी, कीधो ईम दिल मंदो ॥ सा० ॥१३॥
कहे मलया माता लो रूडां,एकाकी किम आव्यां॥ कुश
ल न दीसे नाक जणीकां, के किणे कर्मे संताव्यां॥
॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर जणे पदमिणी मत पूछो, क
हेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज छे बहुलां,क
हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें
आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ सुख मीठी हियडामां धी
ठी, वाली तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिव
सें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवा
विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥सा०॥
१७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी निश

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीवं अनुज्ञा जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसु सींचती, खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, म उदास ॥ए॥ लेइ अनुमति कणे मनें, बांधी वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो, चल्यो नवनथी वेग॥१०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे, रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवे लि ॥ अहनिशि जोवे रे छल मलया तणुं ॥ अनुया यी बेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी नवनें रही रे धीठी, मुज नाणें ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इंम छल केलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे करते लोयणां ॥ बेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे दुःख धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी रे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रे गोरी, कनकाशुं रसमाणि ॥ नवनव जातें रे रंजणां ॥४॥ कहे मलया माता इहां रे नोजी विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां घो

लणां ॥ पयमो साकर भेलवी रे धीठी, चिंतवती म
नें ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥५॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, कग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव ईम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूर्वें
एक राहती रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव
नातें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं गाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने सालुं ताम ॥
तव ईम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जोहा दंत
नलावबी रे गोरी, जे शीखवतुं तुज्ञ ॥ तव० ॥
मया करो मुज ऊपरें रे भोली, करो उचित जे
शुज्ञ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ९ ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति॥नव०॥
नूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे ईम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्ये जीवित दान

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीउं अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती,ना खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली ए म उदास ॥९॥ लेइ अनुमति कणे मनें,बांधी तरकस वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो,चल्यो नवनथी वेग॥१०॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी,कपट महा विषवे लि ॥ अहनिशि जोवे रे छल मलया तणुं ॥ अनुया यी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलडी नवनें रही रे धीठी, मुज नामे ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इंम छल केलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमा ठवी रे गोरी, करती मन उद्वेग ॥ प्रमदा निद्राली रे फरते लोयणां ॥ वेमे पासें आवीनें रे धीठी, प्रते दुख धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मलयीरे धीठी, रीजावे गति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमाते रंगमां रे गोरी, कनकाशुं रसमाणि ॥ नवनव नानें रे करती खेलणां ॥४॥ कहे मलया माता इहां रे लाली, रातें करो विश्राम ॥ जिम सुज नावे रे मनमां घो

लणां ॥ पथमां साकर चेलवी रे धीठी, चिंतवती मन ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥५॥ दिन जिम रजनी नीगमे रे गोरी, कग्यो दिनकर प्रांत ॥ तव ईम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूर्वें एक राहुती रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव नांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां रे गोरी, काढी दूरें खेपि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें आदिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी थई रे गोरी, टालुं एहनुं गाम ॥ जिम तुज नावे० ॥ मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥ तव ईम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत नलावती रे गोरी, जे शीखवशुं तुज्क ॥ नव० ॥ मया करो मुज ऊपरें रे भोली, फगे वचिन जे तुज्क ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ९ ॥ नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति॥नव०॥ नृप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥ रहस्य लहीनें रे कहे ईम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आगें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान॥ रह० ॥ तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो पे जीवित दा

॥ रहु० ॥ ११ ॥ अनय हजो कहे राजीयां रे जोजी, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां शो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वाल्हा रे जोजी, रेसारे जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ नेह कहे ए राइती रे सामी, तुम वहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचने नवि वीससो रे सामी, तो देखाडुं नंत ॥ रहु० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो था ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षमी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ [illegible] नावे हुरो रे सामी, रमे नमे बजगंत ॥ नव० ॥ [illegible] सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी [illegible] ॥नव०॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी हबुक्से रे सामी, [illegible] ष्ट ॥ मदुशो जो जाई निशें रे सामी, [illegible] निष्ट ॥ नव०॥ १६ ॥ प्रातसमय [illegible] सामी, करजो एहने बंध ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण मूरखें सुनो रे सामी, पूरवो कट निबंध ॥ रहु० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी [illegible] सामी, कारण ए [illegible] ॥नव०॥ [illegible]
[illegible]

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विपद्दर मंक ॥ नृप० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जा खे वात ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ एव कथाडुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नृपें तिका रे धीठी, पोहोती स्वन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंमें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नच नव नांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई बाहिर गई, कूड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारे अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे छमाडी वदनमां, बलबलती वें पीर ॥ ४ ॥ रुंममाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

गने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप ग
हे चढयो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी कुंवे कुंवे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप गने रही
होलाल ॥ होजी दीसे ले ते साच, जे सुजनें कनका
में कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुजने दुर्यश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं
जण खेम, सुजने पण विरुवं किस्युं होलाल ॥ २ ॥
होजी करवी न पडे कचाट, पहेली जो समजावीयें
होलाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवणां
हणावीयें होलाल ॥३॥ होजी ईम कहेतो नरनाथ,
कोपानलशुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेडी सेवक
साथ, गुप्त पणे जणे जांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होला
ल ॥ होजी रथ चाढी वन तेह, गुपत पणे हणजो
परी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रालें काम, लोक
जाणे वातडी होलाल ॥ होजी ईम सुणी सुभट ठ
म, खपा नीडी गातडी होलाल ॥६॥ होजी कर

लीधे करवाल, आवत सुनट निहालीनें होलाल ॥ होजी जिहां छे मलया बाल, कनका त्यां गई चालीनें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल फलती बोले इश्युं होलाल ॥ होजी नृप नट हणवा मुज, आवे छे करवुं किश्युं होलाल ॥८॥ होजी तुज पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल ॥ होजी तेमाटे महाराज,मुज उपर रुश सही होलाल ॥९॥ होजी क्यांहिक मुजने छिपाड, जणनी मीट न ज्यां प डे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे कोइनो चमे होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश, पेटी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश, वेसे मांहे एकंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज तालुं दीध, अनय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी आव्या सुनट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल ॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, वेरी रूप सनाव नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, वदच्यो सांग ऊटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी छु ष्ट, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी जागी लो कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥१४॥ होजी ईम कहीनें ग्रही बांहिं, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राइ, श्वापद जिहां वांका
चले होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इ६, दु
खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांईक अ
निष्ठ, इंण सूलें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
हणवुं के वनवास, सुसरे निश्चय आदिस्यो होलाल॥
होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो किस्यो
होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हु
श्रां फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो मांग म
में, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल॥
होजी दारुण कर्म अतीव, छूटे नहीं चाख्या विना हो
लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संभारि, नणती
नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी चन संचार,
आघुं पाछुं चालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी गानी
कनड पाहाड, विषम पल्लीमहि धरी होलाल ॥ होजी
प्रहसमे नीम निराड, आव्या जण नगरें फरी होलाल
॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति
ढा॥ करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
॥रि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल ॥ होजी दीठी

नहिं किण गार, नृप भणे नावी खरी होलाल ॥२३॥ होजी त्रीजे खंडें रसाल, ढाल कही ए बारमी होला ल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता ग्रजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हुवे दिन केटले,जीती तेह किरात ॥ ता त चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया नयने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक च रित्र प्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कु मर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंवर मन, करे एम विलाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीयाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी कांई कीधुं हो दुःख दीधुं मलया बाल नें, हाहा नूलो कांई ॥ चित्तमां कां न विचार्यो हो नवि धार्यो अवसर आपणुं, प्रकृति पलटी मांहीं ॥ नृ० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ जाला ज्युं चि त्त खटके हो अति नटके अग्निसमा थइ, काम क र्यां विण मर्म ॥ नृ० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो जल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

रावो किहां दीसे हो पूछीयें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ नू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां कहो हवे कीजें केम ॥ नू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, ईम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुज रयणें लंछन चाढीउं, गोत्र व मूल्युं एण ॥ उंजंना ईम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीडयो विरहेण ॥ नू० ॥ ६ ॥ वल्लन सुतनें पूठें हो नृप उठी आवे दूंमणो, उघाडे घर ताल ॥ ईम कहे सुत में दीठी हो तुज ईठी दयिता राक्षसी, रूपें करती चाल ॥ नू० ॥ ७ ॥ दोष नहिं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंम ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, वांहडली करी खंम ॥ नू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा को मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संनालो घर सार ॥ अधमपकी जणहासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, उंठा न सहे नार ॥ नू० ॥ ए ॥ कुमर वि

भासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीडे जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउ कांई अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंझुपडी, उघाडे वड वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो वसासा लेती राक्षसी, रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख भूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी छेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंभ ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीती राक्षसी, तेहिज एह सदंभ ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताडी आणी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भेठी हो जणह थीकारें ट्हवी, काढी देशा छेह ॥ नृ० ॥ १४ ॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनेंहि पासीउ, वेगो मौन धरंत ॥ मरवानें अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हे हे मोह करंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी झूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नटीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमें,

सु० ॥जो०॥ सुखिणी दुःखिणीप्रायें रे हो सु०॥ ... परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० नृप ति तेडया तेह रेहो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुणद मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अनय बीडो तत नेह रेहो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रेहो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु०॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा नय नीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवां चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन नास्युं एहने राखती हो सु० ॥ जो० ॥ नृपतिमन निर्विघ्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहती हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूडा लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खांतिगिरितटें वेव रेहो सु० ॥ पडती आखडती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो०॥ एकली स्वयमेव रेहो सु० ॥ मरशे रडवडती रखडती आफली हो सु० ॥११॥ जो०॥ ईम मन धारी बाल रे हो सु०॥ रोती वनमांहिं मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

नास्युं आल रेहो सु० ॥ जयथी तुम आगें कही अ वती वती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाग्री मुजथी जे ह रेहो सु० ॥ सुहदे ते करुणा रूडें संग्रही हो सु०॥ ॥जो०॥ विणठी मुज मति ठेह रे हो सु० ॥ त्राग्री ते पैठी नड हीयडे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ प निंदे इम आप रेहो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिवल चित्त समाप रेहो सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४॥ ॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रेहो सु० ॥ मलियुं ते साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो वाला र यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांयकी. हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमें ढाल रेहो सु० ॥ उपरें ए नांखी रूडी चौदमी होसु० ॥ जो० ॥ कांति वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागे सरस सुधा समी होसु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा, जनक नणी अवदात ॥ क हेवा चर चंडावती, पूरियें प्रेषो तात ॥१॥ वीरधवल पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥स०॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥१४॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो किम वहेशे हे ॥ स० ॥ भूमि शयन करशे किम बालो, नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहित सुत मुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ भूख गई सुख निद्रा थाकी, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर करत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥१७॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे॥स०॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इम जांखी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंदरीचरित्रे पंमित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीयः संपूर्णः ॥ ३ ॥

। अथ श्रीचतुर्थखंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जि न सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सु णतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेनां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ म लय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥३॥ त्रीजो खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ चमुहिं आ दर करी, कहेलुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल या सही, मूकी निशि वन घोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद त णा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ धरयन्ली मानी हिये, फरती ग्रांसू नयण ॥ ग्रारडती परनी करे, विरहाली ईम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मा मोरी अम्मा हि, अम्मा मोरी पाणीडां गईती तलाव हे, हे मारुडे मेहेवासी मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मा मोरी अम्मा हे, सुसरे न पूछ्यो मुज को पंथ हे, हे कोपेनें कलकलियो राणो सोपरे हे

१।

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग ल डुःख शुक्र हे, हे विण अपरावें नृप धींगा थया हे ॥ १४॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे पीयरडुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडिया डुःखथी साहो हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानीवुं पलटी बु द्धि हे, हे पछतावो हवे पाशे अहथी आगली हे ॥ ॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमें किम दाहाडा मो पासें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जननी कां दुं न मुई कांई हे हे डुःखडामां नवि पडती इणवेला इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे सजवुं गोरी त्यांहिं हे, हे रा नारे चित्त धारे शोक घणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥ अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस व्यो नलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें कलनलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सुति क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ घनणे पुत्र वधावुं कांई हे, पापिणी हुं इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥ सुतनुं सुखडुं जोती मात हे, हे दरसें ने तिम पार्के वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परभा

त हे, हे काळीने मायाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥ ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन पहेले वेठी वाला कांठडे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ रिहंत नाम हे, हे संतोपे निज आतम वनफल मीठडे हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ज्ञानी वन कुंजें पाले वाल हे, हे दीपडर्जे हेजाले लालें गद गदी हे ॥ अ० ॥ चोथा खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें ईम नलि नीतें पचणी कमदी हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे,सारथपति वलतार ॥ आवी नदीयें ऊतखो, वींटयो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल वनातां पायरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा मदकता, कारुजणें जलवाण ॥ २ ॥ जल तृण ईंधण कारणें, पसखा जन वनमांहीं ॥ सारथपति पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन कुंजमां, पोहोतो मलया वाम ॥ रुदन सुणी वालक तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ वाल सहित वाला तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागुं ॥ ए देशी ॥
॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुण आंहीं रे ॥ गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संनव प्रत्यें, कहे आकृति तुज आंहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पुत्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥ वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥गो०॥ ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं वजसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ नर्त्तु करुं जगदीश्वरें, मेलवर्त्ता तुं आज रे ॥ गो० ॥ मुज मेरे आवो वही,मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए नर चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विनंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर या लतां, रहेशे शील अनंग रे ॥ गो० ॥ ईम धारी बोली त्रिया, सुण गुणरयण करंम रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ तनुजा हुं चंपालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥ आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥ ॥ गो० ॥ ८ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

सननी भोग रे ॥ गो० ॥ देखी जोयां सारिखो, वहेरे सघला लोग रे ॥ गो०॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो हुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियो मुज मा बापनें, मलशुं लई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ कारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें वसर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो०. ॥ तुज चंमालपणुं कहे, नहीं जाणुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेछायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो जडपी लीये, अंकपकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका ल रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन नयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो०॥ तोपण ते पूंठे चली, नंद न नेहारूढ रे ॥गो०॥१५॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने वलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोप वी, पेठो लई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर ती गानें रवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, आपी करण संनाल रे ॥ गो० ॥१७॥

अंबर भूषण भोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो०॥
भांखे नहिं कडवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥गो०॥
॥ १८ ॥ नाम पूगव्युं अन्यदा,वलसारें करी शान रे
॥ गो० ॥ हवुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अभि
धान रे ॥गो०॥१७॥ व्यवहारी ईम चिंतवे, मम कहे
ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीयें,
कुल एहवुं सुपवित्र रे ॥ गो०॥ २० ॥ चाल्यो तिहां
थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम.रे ॥ गो० ॥ उदधि
तिलक पुर आपणें,पोहोतो कुशलें ताम रे॥गो०॥२१॥
पुत्र सहित गानी गृहें, राखी महिला तेम रे॥गो०॥
दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥गो०॥
॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर ईम भणं
त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण
वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था
तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
रहेशुं आणाकार रे ॥ गो०॥ २४॥ पुत्र नहिं को मा
हरे, ते गमें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय
मालिका, वधशे ईम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व
चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुद्ध रे ॥ गो०॥
कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो०॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पठजो पण ए पिं
म रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम कजतुं, रहेजो शील
अखंम रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वाखो बहुल प्रकार
थी, नाख्यो वचन निहेड रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो
बापडो, न करे वलती जेड रे ॥ गो०॥ २८ ॥ रोश
रुण घर बारणें, थे तालक सुत लेय रे ॥ गो०॥ त्रि.
यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मां
हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नखो, रह्यो लक्षण अ
वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यभिचारिणी को मारीयें,
नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
घरे,होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें वल
इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
बीजी चोथा खंमनी,कांतें पनणी ढाल रे॥गो०॥३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा,पूरे प्रबल जिहाज ॥ परद्वीपें
चालण तणा, करे सजाइ काज ॥१॥ देइ शीखामण
नारिनें, पूठी स्वजन कुटुंब ॥ ठानी मजया जोरथी,

छोड चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ लाजित पूर्वे कहाजनां, जई बेठो गुन संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधो नागर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूरुो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जलनिधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें चाल्ले बाबर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ ईम चिंते सा सुधि भूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे बूमाडी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गाडि ॥ ध० ॥ २ ॥ हूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोगी क्षय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीवन मृत सम. ते त्रिया रे, गल गलती गलनाल ॥ पूछे प्रवहण नायनें रे, वहेती आंसु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पडियो निरखी आपमां रे, वाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणुं रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, वहेतुं प्रवहण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यो बाबरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ वंधारा उतराविनें रे, आपी द

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीते रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ८ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकड रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, तेपण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुष्ट खुवाण ॥ निम्महेरा ठोले नसा रे, प्रगटे रुधिर वधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर जामें करी रे, रुनिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत वाला हुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ विच विच अंतर गालीनें रे, पोषे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांमे रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीधुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पड्युं रे, मोटुं डुःख दोनाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा जूनारणी रे, कां सरजी किरतार ॥ देतां डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ ठाम न ढुंतुं डुःखनें रे,तो आव्यो मो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी चली किण देश ॥ नाल लख्युं वली आवशे रे

सुपरें तेह सहेल ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अवला
नरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स
चरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाके गर्के
चढयो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध०॥ १९ ॥ घरडी तन
लोही लीयुं रे,मूर्छाणी नूपीव ॥ खरडी रुधिरें एकदा
रे, पडी नारंग शूनि दीव ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन
थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंम ॥ चंच पुटें लेई ऊ
डियो रे, सहसा ते नारंग ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मांगें
ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो
सामुहो रे, आव्यो नारंग तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ
मिष लोनें तेहशुं रे, मंके जूऊ तिकोई ॥ लडतां चंच
थकी पडे रे, ऊटके वाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु
रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
कोई जोगिणी रें, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४॥
के धारा हरियव्वनी रे, के दामिणी ये दोट ॥ ईम
रुण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट॥ध०॥
॥ २५ ॥ वाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका
र ॥ तरता गज मत्स्य उपरें रे, पडी सुकृत आधार
॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंडें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

ढाल ॥ पुण्यथकी छद्धियें सदा रे, कांति सुजश जय माल ॥ ५० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पडी, जलधुंतें निरन्नाथ ॥ पण जो ए जल बूडशे, तो थइशे कुण हाथ ॥ १ ॥ मरण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आराधन हेतुक जपे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार पद सांनले, जल वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥३॥ रहि क्षणिक थिर चित्त ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, भुज लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदधनी दिशा, हजी अछे केतीक ॥ हाले नहीं जल वरखुं, चाले इंम मरल ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दीसंत ॥ के सुरपादप वेलडी, घनगिरि शिर विलसंत ॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुलने गजगेल ॥ चाले ठांटी जल कणों, जोती जलनिधि खेल ॥७॥ सुखें सुखें प्रवहण परें, वहतो पंथ सविघ ॥ वदधितिलक वेला वलें, कुशलें पोहोतो मघ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंद्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें

जो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढिउं अरिनो चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिदि डमामे देवा डी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वाटचो सु भट वछंठे ॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे दुर्दंत,सीमाडा जोज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १॥ पुर साहमो जव आवतो रे, जलमां नूपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, वेगो तेहनी पीठो ॥ वेगें तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ एक जणे गरुडें चडयो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे छे स्वछंदो ॥ आवे छे नृप चाले माछो, कोलाहलथी जाणे पाछो ॥ मौन धरी निरखो रही घाटें, जोवे जण छाना रही थाटें ॥जी०॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ खुंढादरूं सुंदरी रे, उतारे मही धीर ॥ उतारि मही बाहिर मोडें, सुंदर पल नूमि जई छोडे ॥ प्रणमी व लियो पाछो छानो, वली वली जोतो सुख प्रमदानो॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरमां मीनो॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे,आवे विस्मय ली

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आर्दें सकल धवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी इंम कसुं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मच्छ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रें, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक्र चक्रनां भ्रण जुउ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, नमीय घणुं दीसे जलमांही ॥जी०॥६॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण भांगे पडी ॥, मच्छवासे किहां दूरें ॥ मच्छवासें वेगी इहां आवी, म कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो ायक, कंदप नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे,सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुं ण तु किम मीनें धरी रे, आफलनी दुःख दीहें ॥ आ फलती आवी पुर एणें,हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मु ज दीठ धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो ल हुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज बिहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढिउ अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिदि डमामें देवा डी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींटयो सु भट उलंठे ॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे डुर्दंत,सीमाडा नांज वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १॥ पुर साहमो जव आवतो रे, जलमां नूपें दीठो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, वेगें तेहनी पीठो ॥ वेगें तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाघ्युं जोवा सारु, मलया माणस खांते वारु ॥ जी० ॥ २ ॥ ए क जणे गरुडें चडयो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे ते स्वछंदो ॥ आवे ते नृप नांखे माठो, कोलाहलथी जाशे पाठो ॥ मौन धरी नि रखो रही पाटें, जोवे जण ठाना रही घाटें ॥जी०॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ खुंढादंमें सुंदरी रे, उतारे मही धीर ॥ उतारि मही बाहिर मोडें, सुंदर थल नूमि जई गोंडे ॥ प्रणमी व लियो पाठो ठानो, वली वली जोतो सुख प्रमदानो॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरमां मीनो॥ नृपति त्यां मलया कन्हे रे,आवे विस्मय लीं

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, हरषद आर्वे सकल चंचाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी इम करशुं राय मगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मझ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतो रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक चक्रनां प्रण जूठ गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, नमीय घणुं दीसे जलमांही ॥जी०॥६॥ कोपवशें को ववरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवह्ण भागे पडी रे, मघ्यवासे फिहां दूरें ॥ मघ्यवासें वेरी इहां आवी, इम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंड्प नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे,सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुं ण तु किम मीनें धरी रे, आफलनी डुःख दीहें ॥ आ फलती आवी पुर एणें,हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मु ज दीठा धनपन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो ल हुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरितार्थ होये डुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

कहीनें नयणें जल नरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सा
कहे हियडे दुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र
॥ १९ ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी दुःख
नुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह
किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे वनता
फडपीनें सुत लीधो ॥ अहे किहां ते सा कहे ठेतें,
क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेस्यो किम
दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे स
होशे जो इहांथी, बूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २
मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछ्युं वली दयितायें
आप चरित्र सघलां ते जांखे, कुमर यथा इछायें
॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संनाषण करतां वेहु, रजनी
निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पनणी कांतें
माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगडो हुर्ड, जाग्यो रवि अनुरूप ॥ अनु
जोतो राजिउ, आवे जिहां ढे कूप ॥ १ ॥ निरखी वे
कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूर्ड सहजरूपें त्रिय
विलसे ढे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुन
ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडतां,

रूपो नहिं जगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोजे अनुपम जोडलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हुनो तुमनें विन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस धंठ ॥ ५ ॥ जूपें विहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें नृपति तणो, मलया जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाछें कम जात ॥ कीधी को डि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥७॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी नि खर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप थी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा यो ग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो ढोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूडी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो ईंम कहेतो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहे ली धणनें खांचीयें रू० ॥ कम उचें नीचें सेवक खांचे

कहीनें नयणें जल भरतो, पूछे तस विरतंत ॥ साचि कहे हियडे दुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र०॥ १ए॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी दुःख अ नुभवगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्यां किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे बलसारें, कडपीनें सुत लीधो ॥ अछे किहां ते सा कहे शेठें, मूक्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र०॥ २१ ॥ लहेश्यो किम नं दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि दोशे जो इहांथी, बूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूछयुं वली दयितायें ॥ आप चरित्र सघलां ते भांखे, कुमर यथा इछायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संभारण करतां बेहु, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पभणी कांतें य माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगडो हुई, उग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद जोतो राजिउ, आवे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूइ सदजरूपें त्रिया, विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुभग ता, यौवन गण ।। [illegible] जोटी जोडतां, नू

-स्यो नहिं भगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोभे अनुपम जोडलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हलो तुमनें विन्हें, आवो रूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस घंठ ॥ ५ ॥ नूपें विहुनें काढ्या, कीधो मांची संच ॥ तव पीठनें नृपति तणो, मलपा जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी को टि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥७॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी नि खर, हणशे मुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो नृप थी, नीसरछुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा यो ग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूडी री ॥ श्यामा चढि वेसो आणो थंदेसो श्यावती रू० ॥ -शजें उतरीयें विपत्ति ठहरीयें रंगमां रू० ॥ वेगे इंम -हेतो दोरी यहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति -ी वेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहे -ी धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें सेवक खींचे

कहीनें नयणें जल नरतो, पूबे तस विरतंत ॥ ता
कहे हियडे इःख पूरी, पुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र
॥ १ए ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेली इःख
नुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह
किम श्रंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे वनता
ऊडपीनें सुत लीधो ॥ श्रठे किहां ते सा कहे शेठें,
धर्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र०॥ २१ ॥ लहेस्यो किम
दन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे त
होशे जो इहांथी, चूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२
मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूठ्युं वली दयितायें
श्राप चरित्र सघलां ते नांखे, कुमर यथा इहायें
॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संनापण करतां बेहु, रजनी त
निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंर्ने, पनणी कांत
माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगडो हूर्ज, जग्यो रवि श्रनुरूप ॥ श्रनुप
जोतो राजिर्ज, श्रावे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण
कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जुर्ज सहजरूपें त्रिया
विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ श्रहो रूप रति सुन
ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडतां,

ल्यो नहिं नगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोने अनुपम जोडलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हजो तुमनें किन्हें, आवो कृपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस घंठ ॥ ५ ॥ नृपें विडुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें नृपति तणो, मलपा जणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राव्यो आव्यो इहां, मुज पाखें कम जात ॥ कीधी को हि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षा निरखी निखर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो नृप थी, नीतरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वाजशुं, यथा यो ग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रू०ही जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उद्धरीयें रंगमां रू० ॥ येवो ईम कहेतो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहेली पणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम वचें नीचें सेवक खींचे

'पो तें प्राहरियो जेहनें रू० ॥ पूंठो नवि छोले आ
छोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न थो
इछमना रू० ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेशं लाग
एहवो रू० ॥ नोजन पिउ पालें न करुं लाखें जेहव
रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गवखें पाहरु रू० ॥
थेगो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ था
शे किम नृपें नाख्यो नृपें नाहलो रू०॥ नीतरशे क्या
थी किम करी त्यांथी वाल्हलो रू० ॥ चिंता चित्त धर
ती हइडुं भरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर
ती दाहाडो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल
हेती, विरहें दहती देहडी रू० ॥ निशिमां एक मा
गें नूतन नागें ते पडी रू० ॥ मंकी विषधरियें रोपें
नरियें क्यांहिंथी रू० ॥ वोली अहि विलगो न रहे
अलगो आहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संभारे जिन
मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा
धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो
वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो नृपति आयो व्याकुलो
रू०॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा भलेरा जे घटया रू०॥
साहमा विष जोला जहेर हिलोला कमटया रू० ॥
ईली थयां शूनां चेतन कना धारणें रू० ॥ एक सास

उलासो मंमित मासो कूरा कूर्यो रू० ॥ १३ ॥ ते डुःख निशि महेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क रवा तन ताजी प्रगटयो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति डुःखें रू० ॥ पडहो वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या वंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पय धोकें संचस्या रू० ॥१५॥ थानक सवि जटकी पाठा ठटकी नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उचाटें खल नल्या रू० ॥ चोथे खंमें चावी ढाल सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू० ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अनिनवो, पडह उवे त्यां आय ॥ नृप सुनटें नृपति कन्हें, आण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत सुख नृप उंलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हण्यो मुज वेरीयें, कीधो केण कुकर्म ॥ मुंजनें अल गो जाणीनें, काढयो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ ईम चिंति

उसासो मंनित मासो छ्एं छ्र्एँ रू० ॥ १३ ॥ ते डुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क रवा तन ताजी प्रगटयो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति डुःखें रू० ॥ पडदो वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करें ताजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फरया रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पय धोकें संचरया रू० ॥१५॥ थानक सवि नटकी पाछा उटकी नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उच्चाटें खल नल्या रू० ॥ चोथे खंर्मे चावी ढाल सोहावी आगमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू० ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अनिनवो, पडह उवे त्यां आय ॥ नृप सुनटें नृपति कन्हें, आण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हण्यो मुज वेरीयें, कीधो केण कुकऊ ॥ मुंजनें अल गो जाणीनें, काढयो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ ईम चिंति

ए उलट्, थयो मोषिताकार ॥ करवा सारथ
॥, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥
ढाल नवमी.॥ गाढा मारूजी, नगर पीने नाठी
र्गें ॥ अमली पीवे कंलाल रे ॥ गाढा मारुअति
वनमाही माहारी साहेबो ॥ ए देशी ॥
॥ मोरा नेहीजी.श्रम वयनें आव्या नर्जे,उपकार
क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे,
मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिखे आनृपणें, पुहवी तल शोभंत रे ॥ मो० ॥
॥क०॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं,काम
करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥क०॥मो०॥ रणरंग आपुं
हापियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ २ ॥ मो० ॥ लाविणुं लोकां विषें, ए ने वशतुं
काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं सुख वो
स्यायकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे सुजनें इहां, आपीश
मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज
सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥४॥
॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ एहवी सुजनें आपतां, कर

काथ॥ आपद पडियो जेहथी हे, मोहें लोजाणो ना
थ॥ प्राण प्यारो वलवा हे कांई जाय०॥ १ ॥ पहेलो
दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरछ ॥ ए वेलामां
साहेबा हे,कुंण महशे तुज हछ ॥प्रा०॥२॥ काठ कुवी
मां जीडियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशो क्यां
थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
ही नृपतिनहें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि
म पीडा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय॥
कांई जीवाडी पापिणी हे, हुं हुइ जे दुःखदाय ॥
॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियडे ये
घति घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन
कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोडीयां हे, ए वेला
जगदीश ॥ तरछोडी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश
॥प्रा० ॥ ७॥ प्रीतडली हीयडे वसी हे, लागे मीठी गा
ढ ॥ साले तूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥
॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पडजो शिला शिर तेहनें हे, पाड्यो
जेणे वियोग ॥ परिजन तेहनां रखडजो हे, जिम का
च्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ विलपत प्रमदा खीज
ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

हे, थे जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नय
ऐं नाहलो हे, तो मुज भोजन वात ॥ बेठी एहवुं
आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी गोर ॥ खडके
इङ्गित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥प्रा०॥१२॥
साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिल
गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
॥ १३ ॥ देव विचाखा विण ईस्यो हे, मांड्यो कवण
अन्याय ॥ राखमिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं ति
ण गाय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो चलें हे,
पण मागे कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी क
रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप जणे ए नामि
नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी कावी हुवे हे,
जा नर ए जीवंत ॥ प्रा०॥ १६ ॥ ए वाला विण मा
हरे हे, न पडे जक पल मात ॥ मत पडजो ए,वात
मां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय
नर तिहां बोलावीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ ही एहनी
तुहनें [illegible] हे, मनो ओ इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
[illegible] पर पची हे, मरशो जो दुःख आणि ॥ तो
[illegible] कहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९॥

राजानें मंत्री इसा हे, मन्त्रिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररत्ननें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गारमिसें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ रादि दुर्मति ए घेलुनें हे, गारज पडशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां लण तिके हे, पोहोता निज निज ठाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पिशु सेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंमें अग्यारमी हे, कांतें पनणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संजारी आपणो, परवरियो जडवृंद ॥ द, क्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पावलि नृपनंद ॥ १ ॥ पु रजन मुख हाहा रवें, आपूरयो आकाश ॥ लोक हृद य करुणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृ पसुत उतपति, पडे चितामां जाम ॥ ततक्षण पुर जन नेत्रथी, पतखां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तडाके तोडी ठे कुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुनट विकट चयमांहि, पेगो कुमर जि वारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाडयो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ ऊबाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें फटकण लागा काठ ॥ चमाकें चमकी ठे छुर
वाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी,
दिशिदिशि अंबर गायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें,
जाणे पावस आयो ॥ क० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग वडे
तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज
ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ क० ॥
॥ ३ ॥ सात जीन शतजीन थईनें, नजतल चाटण
लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां
वागो ॥ क० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस
हा रव श्रण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानर देखी,
सुनट वल्या गुण थुणता ॥ क० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं
तेणें तिम नृप आगें, नांख्युं सकल वनावी ॥ नूप
प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥क०॥
॥ ६ ॥ हुउ प्रनात विना तनु तारा, ढांक्या सुर प्रना
वें ॥ तव शिर रक्षा पोटि धरीनें, आवे सिद्ध सना
वें ॥ क० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग प
ग एहवुं पूछे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शि
शें एह कीस्युं ठे ॥ क० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ
हुं, आव्यो हुं नृप काजें ॥ ईम कहेतो पोहोतो नृप
नवनें, सिद्ध पुरुष शुन साजें ॥ क० ॥ए॥ राख पो

हली आगे नृपनें, कहेनो एहवुं रंगें ॥ ए मालो निज
माथे एहथी, रहेलो, निरख्या चंगें ॥ क० ॥ १० ॥
नृप भणे शुं न हवा अपमां, आव्या वीती लाजा ॥
आग लगी नहीं जगमां केहनें न गणे सतियां आजा
॥ क० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, वनशे कू
डुं बोलवुं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो अपमां, मन साहस
नवि मोल्युं ॥ क० ॥ १२ ॥ सुन साहसथी सुरगण
रीज्या, अमृत रसें घन गारे ॥ घयो सजी विच फरी
हुं तेहथी. आवी रह्यो पय आरें ॥ क० ॥ १३ ॥ वा
र पोटली तिहांथी लेइ. आव्यो राज समीपें ॥ वाचा
तेह पले तो रुडी, बोली जेह महीपें ॥ क० ॥१४॥
नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी बंधी ॥ इहां र
ह्यो वली घय वाली, सुनटें करी दृग अंधी ॥क०॥
॥ १५ ॥ कांत समागम जाणो मलया, मलवानें पसी
आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख
न मावी ॥ क० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पा
वक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते भाखो, पी
यु कहे अवसर पामी ॥ क० ॥१७॥ अंध कूप गत
जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ एमुज गर्ने घ
रनें आकारें, द्वार शिलायें अडको ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूउ मुख सांकडो रे विंजा, किम फरी करुं रे फकोल ॥ रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकडो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिद्ध रूडा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विपम करथ शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरसंक ॥ सि०॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें ऊंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवें आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विपम थर्ले आंवा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ कंपावो वली अंवथी रे मित्ता, नूतल ना ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा०॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट । ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थान मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति ले ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी ...ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० ॥ बिहुं व

मृत्यु मारुरुं रे मित्ता, पडिया नूमि वे हाय ॥सि०॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, करशुं डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज सुंदरी रे मित्ता, वे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ धारी एहवुं श्रादरें रे मित्ता, मंत्री वचन तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ श्रासनथी कह्यो धसी रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ मलया जल नयणें नरे रे मित्ता, डुःख पूरें दिलगीर ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींटयो घणे रे मित्ता, श्रावे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम गिरि ऊंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥ ॥ सि० ॥ सा० ॥ नूपतिनें मंत्री हइये रे मित्ता, वाधे हर्षना डोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गिरि टूंके चढयो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, श्रंच दें खाडयो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में श पाज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥ सफल हजो मारुरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ॥ इंम कहेतो श्रंबा थकी रे मित्ता, श्रापे ऊंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूदे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पडतो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, दो खेचरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुई जन देखतां रे मित्ता, जिम याशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना हाडनो रे मित्ता, जडशें कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहडें सकल सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥सि०॥ ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रजातें आवियो रे मित्ता, ले सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म.

सुरज्ञो कांइ ॥ मि० ॥ मा० ॥ कहेतां उंम जन वीं
टीयो रे मित्ता, नृप नाने गयो भाई ॥ मि० ॥ २०
॥ मा० ॥ श्यामवदन राजा हुवे रे मित्ता, वीहीनो
निरगर्व, मित्त ॥ मि० ॥ मा० ॥ [illegible]यो नेहवे मंत्रवी
रे मित्ता, कुमरवो [illegible] मित्त ॥ मि० ॥ २१ ॥
॥ मा० ॥ [illegible] रे मित्ता, मूके
[illegible] महु
[illegible] ॥ २२ ॥ मा०॥
[illegible] सुन
[illegible] रे मित्ता,

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलां मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यंतर इहां थंबमां, वसिउं सुज नाग्येण ॥ गिरिथी पडियो वचन वदे, उज्जलियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करे मुजनें भद्दी. बोल्यो ते गुण जीइ ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीइ ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें. में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनडुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ पावो श्रम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उवीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं,कहे तुं सुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं,जिम जग नृपनी गाप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रत्यें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ॥ ४ ॥ पण बोल्यो में जेहवो,तेहवो हुये सुकयथ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमथ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी,ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

चाह तुज्झन,कह ता धुं हवे शीख रे॥मु०॥६॥मैं नाण्यु एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे॥ तो एहनें सम जावशुं, करी कूडो उपजाप रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ विपम प्रयोजन ताहरे,आवी पडे कोई जेथ रे॥ संभारो ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेथ रे ॥ मु०॥ ८ ॥ इम हेतो सुर किहांथकी, लाव्यो एक करंम रे ॥ सरस रसाल तणे फलें, भरीयो तेह अखंम रे ॥मु०॥९॥ मु जनें तेह करंमशुं,सुरवर आप उपाडी रे॥ मूक्यो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे ॥मु०॥१०॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे॥ अदृश्य गतिक रूपें तिहां,आवीश हुं तुज साथें रे ॥मु०॥११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशुं छाने हुं तेह रे ॥ शीख दियो इम मुज्झनें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ पाम्यो तेह करंमीउ, नृपति आगलें जाई रे॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, वेगो हुं इहां आई रे ॥मु०॥ ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंमथी,कडकडतो स्वर क्रूर रे॥ उछलियो वलियो महा, पडवंदे भरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ खाउं पहेलो हुं नृपनें, के धुर खाउं प्रधान रे ॥ एक जणनें विहुंमांहिथी, नहिं मूकुं हुं निदान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पडि

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय स्वयंवरा, निरखो
नृप नव नेक ॥ ४ ॥ तेह भणी नय गोचरें, निगम
विचारी शुक्र ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि
ला मुक्र ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए
वयण ॥ अनय रसें कोपाववो, न घटे ए नर रयण॥६॥
॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥
॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पडीयो विमासण मांहिं
रे ॥ नारि रस रातो पेखो उपांपल गोचरें होलाल ॥
हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्राहिं रे ॥
करवुं विधि केहो, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥१॥
मंत्र तंत्रादिकयोगना रे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥
साधे वादिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह
भणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अत्यंत
र कोई. दुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कार
ज विण कीधे सही रे, जोता पुरनां लोक रे ॥ लोशे उ
हीयाला, नोंगे पटशे वापडो होलाल ॥ फरि नहीं मा
मे सुंदरी रे, थाशे मरणानि फोक रे ॥ पहेली जे की
धी, मलशे नहिं वली तापडो होलाल ॥ ३ ॥ ईम
करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विषाल रे ॥ न
हीं होशे भला रे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

त्रीजुं काम करे हवे रे, तोयुं महिला संनाल रे ॥ थागी ए तुजनें, वचन थकी हुं न मोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे वांसो, देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमंग रे ॥ सुगु णा सोनागी, मानीश पाड इहां खरो होलाल ॥५॥ नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह श्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रामनें रे, ए श्यो मांमयो उधाम रे ॥ ए हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोंण आपणी रे, जो पण होय लख दाम रे ॥ ईंम कहीनें खांचे, नाडी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वाकूं वल्युं रे, आव्युं ग्रीवानें ग म रें ॥ ग्रीवा मुख गामें, आवी रही तव आफणी होलाल ॥ ७ ॥ पूठ निहालो खंतशुं रे, काम थयुं तुज ठीक रे ॥ नृपति गुण मानो, वचन सुणी ईंम तेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोपें नखों रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ हुण धूरत धीठा, लाज नहीं तुज ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें माहरो रे, जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्यायी, बीहितो नहीं

अनमंजसे जीतात । अम जीवों तजी नमते रे, को
[illegible] ॥ [illegible] । काई मर वाली
[illegible] ॥ [illegible] रे, [illegible]
[illegible] रे । [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

शे, तो थई ने एटले वाणी होनाल ॥ सिद्ध विमासीए
हतुं रे, बोल्यो एह जो गेह रे ॥ पाये अणुवाणे,
वनमां जिन ध्याने धूणी होनाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन
अजित जुहारीने रे, पाये आवे आंहिं रे ॥ नो थाशे
माजो, बीजो उपाय नहीं जिम्यो होनाल ॥ अमभरखू
पण गजिमो रे करे जे नानो आंहिं रे ॥ माजो जो
थाशे, तो मुज [illegible] करे जिम्यो होनाल ॥ १५ ॥
लोक कहे जिन [illegible] रे [illegible] आवी बीग रे ॥ नृ
पतिने पूछे, [illegible] नहिं [illegible] होनाल ॥ रूप
[illegible] रे, [illegible] रे ॥ दीसे
ते [illegible] होनाल ॥ १६ ॥ पुर

थो पाने, नाले मार कुचोटनी होजाल ॥ जोक ग
मरु समजाविने रे, धाजे हवे अनिमुक रे ॥ चिने
डेर यांते, त्यांद नजा मिह कोटनी होजाल ॥१०॥
वरन वनाने सावडे रे, वेतु पाडे जाम रे ॥ जागी न
जि वना हुनु अंतेनर न्या खुशी होजाल ॥ कर जो
ड कन मिठन रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा
सनेह, जाईये ने सनो हुन, आजाल ॥ २० ॥ लि
ठ नव नगन इज रे चोरे मनया आज रे ॥ नपनि
पामन जरन कराव नेहशं होजाल ॥ चोयो चो
या ननर्न, र मह रहरम, ठन रे ॥ नांवा रन ने
ने, व निरिजन हुये नेहशं होजाल ॥ २१ ॥

दाहा ।

॥ ८ ॥ संभारें तेह देव, करंगा सफल मनोरथाजी॥ कंपावे ततखेव, दीवें पतंग पडे पृथाजी ॥९॥ हाहा-कार करंत, लोक मख्या पुरजन तदाजी ॥ आंसुडे व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो भूप प्रमोद,कुमर कंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य तिलकराज, अगनिथी नीसरिओ तवेंजी ॥ वीते जि म सुरराज, आरोह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन नूषण धराजी ॥ जलहल ज्यो ति तुखार ॥ अंगें साज नला नवाजी ॥ १३ ॥ धौ रादिक गतिपंच, १ धौरितं २ वल्गितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं॥ जेहें तुरंग रमाडतोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक नूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो ईम कहे उलटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह छे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पढियो हुं इहां आज, बीजो तुरं [illegible] . वलीजी ॥ वलतो सिद्धतां काज, एहवा थया [illegible] टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

जरा नहीं संक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर हुआ विहु रंगमेंजी ॥ १८ ॥ सांनली वायक एह, रा जादिक सवि जूजूआजी ॥ वलवा अगनिमां तेह, प डवानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष न, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ बेहु निहाल, तीर्थ प्रनावें इंणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इंण ग म, तन होम्यां फल ले बहूजी ॥ धरता मोटी हाम, आव्या नर पडवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध विचार, रे रे क्षण एक पडखीयेंजी ॥ आणो घृत नि रधार, अगनि जुगतिशुं पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आण्या घृतना कुंन, ॐ दह दह पच पच इस्योजी ॥ नणतो मंत्र सदंन, आहूति ये मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहे लो पेशीश आहिं, हुं इंम कही नृप पेशीउंजी ॥ पूर्वे सचिव संवाद, जई नृप पासें बेसीउंजी ॥ २४ ॥ कुंमरें वास्या लोक, पडता अवर हुताशनेंजी ॥ पड स्यो पडलो स्तोक, ध्यावता यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, जागी नहिं जय आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इंम पुरलोकना बोल, सांनलीनें सिद्ध बो लीउंजी ॥ कांरे नूख्या अटोल, अगनि पड्यो कोण

जीवीतजी ॥ २४ ॥ अगनि पइिठ हुं आज, सुरसा निध्यथी नीसरयोजी ॥ बोली सकल समाज,वैर वालण रूडो कयोजी ॥ २८ ॥ फलियो अनय करक, नृप मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दक्क, बोल्या वली आमंत्रिनेंजी ॥ २९ ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो जो राजा आपणोंजी ॥ ईम कही राजा कीध, महोत्सव आडंबर घणोंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिद्धराज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां- शिरताज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अडके विषमे काम, झेजे सुद्ध संसारितजी ॥ आनाखी सुर आम, सिद्धें तेह विसार्जितजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंमनीरंग, मलय चरित्रथी संग्रहीजी॥ कांतिविजय मन रंग, ढाल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो देशांतर थकी,तेहवे तिहां वणसार ॥ लेई निरुपम भेटणुं, चलि आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप भेटी बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउ, सारथपति ततकाल ॥२॥ एक एकनें ओलख्यां, धातां नयणां भेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न चूके नेट ॥ ३ ॥ मरतो तुरतज वरीउ, आव्यो [illegible]

चिंते हैहे श्रावीयां, उदय मह्या मुज पाप ॥ ४ ॥ श्र
हो मसोदधि परतडें, श्राव्यो एहनें छोडि ॥ देवें तिम
ए नृपसुं, मेली सांधा जोडी ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें,
श्रनुचित करण श्रन्याय ॥ कहेशे ते जोनृपनें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात,
प्रणमुं हो प्रिया प्रणमु पग नाथें करी जी ॥ ए देशी॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो
हो प्रिय निसुणो जे श्राव्यो वाणीयोजी॥ नामें हो प्रि
य नामें ए वलसार,तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविधहो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो छानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
करतां श्रन्यर्थना जी ॥ २ ॥ ईणी परें हो प्रिय ईणी
परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण
कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परि
कर हो निज परिकरसुं कांतें दोपीयोजी॥ ३ ॥ कीधं
हो नृप कीधी क्रियाणें छाप, बालक हो बहु बालक
तास जणावीयांजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां चिंतातें
श्राप, सादरहो ईम सादर चिंता नावीयोजी ॥४॥

टण हो सुत टूटण कोई उपाय, दीसे हो नहि दीसे हि कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे ते एक ताव, वलतें हो पवि वलतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी होय, परिचित हो सुत परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर तनोय, धींगड हो बल धींगड वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जाती हो तेह जाती एहनें ताम, गोडण हो सुत गोडण विधि करशे सहीजी ॥ अडलख हो हवे अडलख सोवन धाम, परठी हो तत परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आपणा हो धर आपणा परदेशा थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी गात, टूटीश हो हुं टूटीश एह नेहें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजु सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो ठानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ९ ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ दुर्गम हो अति दुर्गम तिलक गिरि त्यांहिं, भीषण हो जिहां भीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूनी वात, एहवी हो धुर ए-

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम जाति, नीमें हो वन नीमें मलयानें ग्रहीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या वेहु नरिंद, निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जय हो तेण दुर्जय भीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां मलया वाल, दीठी हो नहीं दीठी नहिं किण थानकें जी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल,मलियो हो जई मलियो सोम अचानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपनो आदेश, पामी हो वर पामी वर तिम वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणतां हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आधुं हो धन आधुं देतो वीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रत्यें ह सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंमीर, लोनें हो वहुलोनें वात ग्रहे धसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो एह नृपकुल साथें हेव, चाल्युं हो नित्य चाल्युं आवे आपणेजी ॥ वेगे हो कोइ वेगे नूतन एव, तेहने हो हवे तेहने हवे हणशुं रणेंजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस लेशुं लूंटि,सार्थप हो वली सार्थपनें मूकावशुंजी ॥ थाशे हो अम थाशे महानी त्रूटि, अरिनो हो वली अरिनो

ठाम चूकावशुंजी ॥ १७ ॥ मंत्री हो ईम मंत्री दोष नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश,करता हो पथ करता पथ सबंदशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ चा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा मेरा फावताजी ॥ १९ ॥ वे नृप हो हवे वे नृप मूकी दूत,आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंडें ढाल,नाखी हो ईम नांखी सलरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरण शूर वन्ने मली, शीलावी अद्भूत ॥ सि द्ध नरेसर उपरें, मूके दुर्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल सुख, साहसिक निर्लोभ ॥ स्वामीभक्त हित मग कथक, परखद माहे अक्षोभ ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वसह मतिवंत ॥ नीति निपुण छाद्मक पिशुन, (शत्रुनो चाहित) ए गुण दूत वदंत ॥

॥३॥ असवारो केकाण रथ, पहेरो काच कुलिम्म ॥ सिद्धराय जवनांगणें, जइ पोहोतो जालिम्म ॥४॥ द्वारपाल नृप वीनवी, दीधो जवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिद्धरायनें, भांखे इंम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ वइया ते पुररो मांडवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीगणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दांतोने फोज लेइनें रुडेजी आवे ॥ चं द्रावती नगरी धणी रे, वीरधवल ढोगाल महाराजा ॥ द० १ ॥ ए बेहु एकमतुं थया रे, रूठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस खांतशुं रे, लेशे ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते सार्थे बे नृपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ता जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता चली रे, मागे नहीं कांइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाणे एहनें नृप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प ड्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणें जाते आवते रे, कीधो अमर्श नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगर वाला वस रे, ते जणी मूको एह म०॥द०॥
॥ ६ ॥ कहेवाइयुं महारे मुखें रे, श्रम नृपें ईम तु
ज्ञ म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे,पालो राज्य
सतुज्ञ म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पडिया पण मुख
हे मह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥
वाह्याली पाडु गायनी रे, जो श्रापे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे,एतुं पण मामूर म०॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिहिक पातरे रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल श्रंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ श्र
म नृपें वांहें ग्रह्यो रे, ते डुःखीयो किम थाय म०॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर श्रढे तुं साहेवा रे, पण
तुज कटक श्रलप्प म० ॥ प० ॥ सायरमां जिम सा
धुर्ड रे, पाइश त्यां तुं गडप्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥द० ॥
एह वातें मत श्राणजे रे, शंका बल ञमदेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ पाइश मां तुं श्राकलो रे, तुजबल
नें विश्वास म० ॥ द० ॥ वे जण उदय एकतुं रे,ए

इटने रे, न गयो लाजन शर्म म० ॥ द० ॥ तो अ
म रखिवाने रहे रे,फेडो नृपनो धर्म म०॥द०॥२३॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग म० ॥
॥ द० ॥ तेहने पण रसंजावशुं रे, खग साखें रण
संग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सवे मनोरथ एहना रे, पू
रीश हुं इणवार म० ॥द०॥ जा कहेजे तुज पूरवें रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ द०॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो
वही रे,चोथे खंमें अनूप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए
अढारमी रे,कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द०॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, वहि मंमपमां आय ॥ ढ
क्का तिहां संग्रामनी, वजडावे सिरुराय ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मदें, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल
या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महेलामां मल
या जणी, ये रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रं
गें शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, थिग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगड्या, वागां वड र
णतूर ॥ रसिया नाद पंचेरिया, अधिग उलटयो शूर
॥ ५ ॥ उंपां ये करवालने, टोपां के पहेरंत ॥ तोपां

केता सक्त करे,घोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय हेषणों, रथ चितकार अखंभ ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउं ब्रह्मंभ ॥७॥ कवच धरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाड ॥ रणथंभे जई वागियां,फोजां तणां कमाड ॥ ८ ॥ बे दल आमा सामां, अडियां आई सवा हिं ॥ तामलिअणपेरा वही,तारू नड रण मांहिं ॥९॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे नडे सिंहशं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनड वनना मदा मद झक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढयो जेह ते गज चढयाथी अडे, रथ चढयो रथचढयाथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरं गधर साथ झपटां लीये, पायचर पायगां संग झूजे ॥सजे०॥२॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु सिरे, गुहिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर भैरव न णी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सु णत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूले ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच नीचां तणां, भेदीयां तिखण रोमांच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिलकार झबकार जलनो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

केता सज्ज करे,घोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय हेपणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हुवे ब्रह्मंम ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूण रण खेलाड ॥ रणथंचे जई वागियां,फोजां तणां कमाड ॥ ८ ॥ वे दल आमा साहमां, अडियां आई सवाहिं ॥ तामलिअणपेरा वही,तारू नड रण मांहिं॥९॥

॥ ढाल श्रोगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप वे नडे तिहवें, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ वनह वनना महा मद झक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढघो जेह ते गज चढघाथी अडे, रथ चढघो रथचढघाथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरंगधर साथ झपटां लीये, पायचर पायगां संग झूजे ॥सजे०॥२॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु शिरें, गुहिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर नेरव नणी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच नीचा तणां, भेदीयां तिसण रोमांच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शब्द चितकार फयकार जननो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

केता सक्क करे,धोपा केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार अखंभ ॥ सिंहनाद शूरा तणे, वधिर हूडं ब्रह्मंम ॥७॥ कवच धरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाड ॥ रणथंभे जई वागियां,फोजां तणां कमा ड ॥ ८ ॥ बे दल आमा साहमां, अडियां थाई राग हिं ॥ तामलिअणपेरा वही,तारू चढ रण मांहिं॥९॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अनि चोज नृप बे चडे सिंधुडो, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनड वनना मद्दा मद छक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडे थाई टूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ़पो जेह ते गज चढ़णार्थी श्रडे, रथ चढ़यो रथचढ़णारी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरं गधर साथ झपटो लीय, पायधर पायगां संग झूजे ॥सजे०॥२॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु सिरे, घुदिर निशाण चोमाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर जैरव न णी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ ए णत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह दासनेह ज्यों द्विगुण फूले ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच नीचां तणां, भेदीयां तिखण रोमांच शूले ॥ स० ॥ ४ ॥ झल चिनकार फणकार जलनो जिस्यो, गाद्दीयो गयणार

गुंजरीके ॥ खडग काळोल खूपदंत मेवे तिहां, फेर न हीं नलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुद्दड वच नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें मद्दा सिंहनादें ॥ शुजपुगा फालपी स्वुन शुगा फालता, करत रण नयें लीला विवादें ॥स०॥६॥ वीर शिरवाल रण घालमां ऊलसुस्या, कर्ध्वेमुख तारा रुचि तेम शोजे ॥ ज्वलित मन रोष पावकथकी नीसरे, धुम धोरणी जिसी गग न घोजे ॥स०॥७॥ करत लनकार हलकार नड को पिया, घलत धमकारशुं शेष मोजे ॥ फर मद्दी ढाल धुंताल धुंकल रसें, लपल कंठाल करवाल तोले ॥स०॥ ॥८॥ जाति कुल वीर्य गुण वंश वदनावता, वंदिजन प्रवल शूरां जगाडे ॥ चमगिया योध बल बोध करि थापणा, रण तणी सबल वाजी फ[illegible] ॥ ए ॥ अश्व खुरताल प्रहतावधी कव[illegible] वर घडी सूर नावी ॥ दिशि [illegible] अरुण रं धरा, जाणे विण काल [illegible] स० ॥ १० ॥ सगग शर धार वरषण लगी [illegible] दिशें, वगग वरह चले थगग गेडी ॥ रणण रणकार नली (फरसी तणा वागिया, तिल सुदढाण नाले उपेडी ॥ स० ॥ ११ ॥ खडग खटकार गजदंत कपर पडे[illegible] खां

पगें, दीग आवत तेण ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो
हो. आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि
या हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मोहो
मोहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥
॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, गाळ्यो विरह हुताश
॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास
॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी
शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, सा
ज्जननो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ ह्युं एक इ
ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शीत ॥ स० ॥ सैनाधिक
(नाटचारणादिक) वाल्या निर्मल सहे वाहर डीत
॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धपुरें निजपुर भणी, पधे
राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विरच्या निज निज परिक
रें, आव्या नयनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ गोरी
सुख संसारीनें, राणी मलया नाम ॥ स० ॥ बांधा
वी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥
तुरत करावी महोत्सवें, भगनादिकनी भक्ति ॥ स० ॥
सैनिक सर्व संतोषियां, नृपाजें नवी युक्ति ॥ स० ॥
॥ कु० ॥ १९ ॥ नाम भ्रमुर आवें सहु, वेगे सासरी
आदि ॥ स० ॥ हृदि निवासी कुमरनी, पिम हाडे

चित्तमांहि ॥ स० ॥ कु०॥ २० ॥ सुत आगें जनका दिकें,नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥कु०॥२१॥ चोथे खंडें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांनलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें पनणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल कपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखडी दि शि दिशि रंक ज्यों, पडी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध दुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन म होदधि दुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, उठी नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ शूरपति महीपति बोले ए,पडिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन दुःखनी गांठडी ए ॥१॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूडो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २॥ काल कखुं में घण जा णुं, जल पीधुं ते विण गाण्युं, अतिताण्युं, तुज साथें

में कुमति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम जो गुणवंती खरो, थ्याफरो, मननो हवे दूरें करो ए ॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, या रत्नियायत गुणनरी, दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुतरा त णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, दुःखनां तुरत विमासीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस करुणा रति ननी, धृतिगति, सूरिम गुनकृत तुज न लां ए ॥ ८ ॥ ईम महावल गुण नाम्यना, नृपादिक यश दाख्यना, जण किता, महाई महयतने तिहां ए ॥ ए ॥ जनकादिक पुत्र तिहां, वन्म कहा सुन ते कि हां, जीधो इहां, पाषांडे ज वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र कहे वाणिज घरें, छाना किहां किण उवर, पण सारें, खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेहनें पुत्रां त्यारों, कनरहो नहीं पावरी, थ्याकरो, करतो ते दरवाहडो ए ॥ १२ ॥ ततक्षण सुनटें थ्याणियो, पण थोथानें ना णीयो, वाणीयो, दुःख पीडयो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥ कहे रे कुमति शुं कयो, पुत्र छोडनें किहां धयो, तारो रथ्यो, किम तुजथी थ्यम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करतु प

दशो तुज शिरें, तेतो करशुंद्विज खरें, पण अवसरें,सु त जोवा देशुं नहीं ए ॥१५॥ बीहीनो ते कहे तो आ पुं, पुत्र तुमारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ छोडो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा डो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला छे नहीं ए ॥ १७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, ति ण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला नो झलकतो ए ॥१९॥ नृपादिक सवि हरखीया,पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण नखां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरेसी निर धारिनें, कुमारनें, कीधी नामनी थापना ए ॥२१॥ ते कहे बल इति थापना,कीधी छे करी कल्पना, उत्थापना, चित्त माने ते कीजीयें ए॥२२॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह् गह्यो, लेवा धननी गांठडी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठडी,सो दीनारनी दीठडी, कायडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोरायी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें छोडीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज नावित

ढाल पांचीशमी ॥ वणजारानी देशी ॥

॥ चित्त चूलो रे कोई छांमो मोहनी नित, लागो वि षयपारधींदकी, नवि चूलो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, कल जोवे नाखो तकी ॥ न० ॥ १ ॥ चि० ॥ पंती सांकडे ठरामांही, चूला काल अनादिना न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहि, खोया फोकट के ई दिना ॥ न० ॥२ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए हमां स्वाद न को अछे ॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल पटाय, पछतावो होशे पछें ॥ न० ॥३॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ छो मो मथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति जजो ॥न०॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छांमजो ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा डजो ॥ न० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहने अन्याख्यान, चा डी रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादावा न, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥ ॥ चि० ॥ कुमति तणा ए जाल, छाण अढारह नित्य थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जीतो इंद्रिय गाम, मन मां कडलुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ वावो वित्त सुठाम,

शील सुरंगो आदरो ॥ न० ॥८॥ चि० ॥ परवो प
स्यास,अहनिशि जावो जावना ॥ न०॥ चि०॥ सु
दीये विलास, कारण एता पावनो ॥न०॥९॥चि०
त्रिम ए संसार,तन धन यौवन कारिमां ॥न०॥चि
जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥न०॥१
॥ चि०॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनो सह्रुको रा
॥ न० ॥ चि०॥ स्वारथ विण नर त्रांहि, वालानें थ
दगां ॥ न० ॥११॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, ए
ज साथें आवशे ॥ न० ॥ चि० ॥ नागरगां कुटर
प, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ न० ॥ १२ ॥ चि०
तुंम तणुं जिम त्राण,नरजव धर्म विना तिस्यो ॥न०
॥ चि० ॥ सुलहा नवनव प्राणि, धर्म नहीं मलशे
स्यो ॥ न० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत करीने, म
नव नव पुण्यें लही ॥ न० ॥ चि० ॥ पाम्या योग
लंन, सफल करो हवे ते वही ॥ न० ॥ १४ ॥ चि०
थावो अति यजमाल, अवसर फिरि नहीं आ
शे ॥ न० ॥ चि० ॥ लाल गमे जंजाल, धर्म मारग
स पावश ॥ न० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चितमां आ
प, कहेवो पछी जाणुं नहिं ॥ न० ॥ चि० ॥ टाली

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इंम दीयो ॥ न० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ न० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ न० ॥ चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ न० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूठे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलधकी, जखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंत ॥ कारण ते सुणवा तणो, ठे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पत्तणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ दुर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधिमां गजमीन ॥ का० ॥ पडतां नारंद सुखथकी, अति दुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्सनें वांसे पडी, जाणे चढी रे, कमला गजनें पूंठ

॥ का० ॥ गाढुं नवपद ल्यो मन्यो, श्रवणें सुण्या रे, मोर्ने मनमां तुठ ॥ का० ॥ २ ॥ ईलापोल् कथा घणी, गीतें घाली रे, दीठो मन नव श्राप ॥ का० ॥ सीता वाली नि रमना, मन कृपना रे, वाध्यो प्रेमनो श्राप ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ गोतो मलया चंजणी, पुत्री कन्यो रे, नाणो [illegible] मीन ॥ का० ॥ [illegible] श्रापडी, [illegible] [illegible] ॥ का० ॥ ५ ॥ सुजशो [illegible] [illegible] ॥ का० ॥ [illegible] [illegible] ॥ का० ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ का० ॥ [illegible] ॥ ॥ का० ॥ [illegible] ॥ का० ॥ [illegible] ॥ का० ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ का० ॥ [illegible] ॥ का० ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ का० ॥ [illegible]

मुक्त है ॥ जिनमित नामें स्तुति, पनांनो पूर्वे प्रति
क्त है ॥ पनांनो पूर्वे [illegible] पुरातन केवली, ऐन नो
मे है ॥ १ ॥ [illegible] ॥ [illegible] तेहने हुवी, क्यां
[illegible] है ॥ [illegible] जिन जिनसुंदरी, नामें [illegible]
[illegible] है ॥ [illegible] ॥ [illegible] मनी पुरनी जिनहैं,
[illegible] है ॥ [illegible] जिन जिननी,
[illegible] ॥ २ ॥ जिनसुंदरी
[illegible] जिन [illegible] है ॥ जिननी मैं
[illegible] है ॥ [illegible] ॥ ॥
जिन[illegible] [illegible] जिनमोत
है ॥ [illegible] है ॥
[illegible] जिनजिनने हुवो
[illegible] जि
[illegible] है ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] सहाराज [illegible], [illegible]
[illegible] तेह है ॥ जिनजिनें [illegible] जिनो, [illegible]
[illegible] है ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ जिन [illegible]
[illegible] तेह है ॥ [illegible]
[illegible], जिनवर [illegible] है ॥ जिन ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] तेह [illegible] है ॥
[illegible]

...निज मोटा गुण लहु करे, ... ॥ ... ॥ धन्य धरामां ते नरा, निरजा ... छे ॥ नि० ॥ १० ॥ ... ॥ मु० ॥ ११ ॥ ... दिन नेवे नेव रे ॥ ... पशुपालक देव रे ॥ ... ॥ १२ ॥ ... ॥ भोजनना ... ॥ १३ ॥ पण आव्यो गोवालीयो, ... ॥ आवर जन पण आवरे, आवे ... रे ॥ पा० ॥ १४ ॥ खीर त ... पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ ... शीतल जल पानक देय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ ... अनुकंपे चिंते मिन एम सुहृद रे ॥ ... आवी जहुं, होय तो मुज जनम कयथ रे ॥ ... ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम साभुलो, मलीयो मुनि ... पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन ... आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर ... लियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिज्ञा

जी एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा०
॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोडी आगल आव
रे ॥ पनणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय
रे ॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ इत्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ पोहोतुं अनगार ना
वयो, मदनें शुभ कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
वियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोण रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे, जल पीवा बेठो सोय रे ॥ त० ॥ २२ ॥
पग लपट्यो निद्रांथी लशी, पडियो जल फंदे जाय रे ॥
मरण लह्यो ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेसरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प नामें थापियो, तस तात मरण
संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आदर्यो, थई
बेठो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंडें ए कह्यो, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र स्यो, निजमंनो एकतान ॥ क
डा नडा नारिशुं, बांधे वेर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रनें, निज लजनो लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय जे टवा, चाल्यो सपरीवार ॥१॥ पंथें वहेतो अधमगें, आ व्यो ज्यां वड हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे त्यां निज देठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशु न सुकृत ए मुंम ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अ शुन असंम ॥ ४ ॥ इंम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा हन थोनाड ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांम कुहाडि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जेसोदारनें गोरीमें ढोला, पढीरे नगारारी गोर ढोला, नाग मजा जे रे रणसिंघ नागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुनने ईहां हांजी, परिसह मो टो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥ त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नह वससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥चि०॥१॥ पद अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या न महोदधि लहेरमां हांजी, कीजे मुनि अविकार हां जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं वाकरी हांजी, कनो ए हव मांहि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपो मळराली ॥ कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

नी एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोडी आगल आय रे ॥ पनणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय रे ॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो फासु पय एह रे ॥ इत्यादिकनी शुद्धता, निरखे मुनि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ वांच्छुं अनर्गल ना वधी, मदनें शुन कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आवियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप कृतारथ मानतो, पीने पय शेष तिकोय रे ॥ विरम तटें सरोवर तणे,जल पीवा बेगो सोय रे ॥ज०॥२२॥ पग लपट्यो तिहांथी खसी,पडियो जल कंमे जाय रे॥ मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥ म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उत्पन्न रे ॥ कंदर्प नामें थापियो, तस तात मरण संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आकमी, थई बेगो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंडें ए कही, वीशमी ढाल रे ॥ का० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं नियमित रहो, विलसंतो एकनाल ॥ इ. डा नडा नाम्बिशुं, बांधे वैर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

प्रिय मित्रनें,निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय जे
टवा, चाल्यो सपरीवार ॥२॥ पंथे वहेतो श्रमणनें,श्रा
रुपो ज्यों वह देव ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे
र्यो निज देव ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अद्य
न मुख्य ए मुंम ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अ
शुन अखंम ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा
हन योनाड ॥ करे परिसह साधुनें, पाविणी रांम
हांहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ जेसोदानें गोरीमें ढोला,
पदीरे नगारारी गोर ढोला, नाग मजा जे
रे रणसिंघ नागोरा ॥ ए देशी ॥
॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मो
तो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग ठावे ॥
त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नद्य
वसलियादिकें हांजी, आगारें निरवेद ॥चि०॥१॥ पद
अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या
न महोदधि लहेरमां हांजी, जीले मुनि अविकार हां
जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी श्रमणुं वाकरी हांजी, क्रनो
ए इत मांहि हांजी,कहेती एहवुं रे,कोपी मठराजी ॥
कुमतें व्यापी रे,आचरणें काजी ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

पुर पृथिवीठाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रियसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जां० ॥ ४ ॥ देखी वैर संभारिधुं, कोपें कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बिहुं ऊपर जई, नाखे निशिमां परभिंति रे लाल ॥जां०॥ ॥ ५ ॥ शुभ परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए तादृशो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ जां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते,हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी,तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुड़ा नड़ा नारिधुं, तस फल इहां लाधां पेर रे लाल ॥जां०॥८॥ पूरव वैर संभारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांहे उद्यम आण रे लाल ॥ जां० ॥ ए ॥ पुण्य प्रभावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतो निशि देखी गृहें, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १० ॥ वस्त्र विभूषण कुमरनां,हरियां ईर्षे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ जां० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ तस

मीठुंन मनोहरू, ग्रन्थनमाला अमृकार रे लाल ॥ ॥ ना० ॥ १२ ॥ खूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहि रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संनारी वैर प्रमाद रे लाल ॥ ना० ॥ १३ ॥ गतन य वहिंननी प्रोनथी, थाप्यो लई पलका मंच रे लाल ॥ कोटी जायें पण रस होवे, है विरमी प्रेमनी गंठ रे लाल ॥ ना० ॥ १४॥ चोथे खंर्म सुंदरू, थई लनाखी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी रधवल नृपाल रे लाल ॥ ना० ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर विस्मित होवे, वीरधवल नृपाल ॥ पूछे ईम केवली प्रत्यें, थापी करतल नाल ॥ १ ॥ स्वयंवर मंमप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें,तो हार दियो किम राच ॥२॥ हवे कुमर कुमरी मनें,निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, नांखे गुरु तेणें गण ॥ ३ ॥ कुमर मलो पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकार्ये नव वैर थी, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, भाखे सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

पुर पृथिवीठाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रि यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ नां० ॥ ४ ॥ देखी वै र संभारिगुं, कोपें कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बि हूं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरभिंति रे लाल ॥नां०॥ ॥ ५ ॥ शुभ परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अका ल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ नां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते,हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी,तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ नां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परभवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुडा नडा नारिशुं, तस फल इहां लाधां घेर रे लाल ॥नां०॥८॥ पूरव वैर संभारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांहे उद्यम आण रे लाल ॥ नां० ॥ ए ॥ पुण्य प्र भावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सू तो निशि देखी गृहें, करती उपसर्गेह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ नां० ॥ १० ॥ वस्त्र विनूषण कुमरनां,हरियां ईणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ नां० ॥ ११ ॥ प्रथम मि लनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥ जां० ॥ १२ ॥ सुतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह रियो निशिमांहि रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी, संचारी वेर थयाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गतत य वद्दिननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंव रे लाल ॥ कोढी नवें पण रस दीये, हे विषमी प्रेमनी गंव रे लाल ॥ जां० ॥ १४॥ चोथे खंमें सुंदरू, थई सत्तावी शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूढशे, इहां वी रधवल नृपाल रे लाल ॥ जां० ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर विस्मित होये, वीरधवल नृपाल ॥ पूढे इम केवली प्रत्यें, थापी करतल नाल ॥ १ ॥ स्वयंवर मंमप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो नहीं मलया प्रत्यें,तो हार दियो किम राच ॥२॥ हवे कुमर कुमरी मनें,निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र विचित्र ते, नांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें नव वैर थी, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें, कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आखे सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

पुर पृथिवीगाए रे लाल ॥ श्रावी देखे विलसता, प्रियसुंदरी प्रियनें टाए रे लाल ॥ नां० ॥ ४ ॥ देखी वैर संनारिखुं, कोपें कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बिहूं ऊपर जई, नाखे निशिमां परचिंति रे लाल ॥नां०॥ ॥ ५ ॥ शुन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए तादृशो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ नां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते,हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी,तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ नां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रूडा ऋडा नारिखुं, तस फल इहां लाधां पेर रे लाल ॥नां०॥८॥ पूरव वैर संनारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांहे उद्यम आण रे लाल ॥ नां० ॥ ए ॥ पुण्य प्रनावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतो निशि देखी ग्रहे, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ नां० ॥ १० ॥ वस्त्र विनूषण कुमरनां,हरियां इंणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ नां० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

मीपुंल मनोहरू, सुरवनमाला, अनुकार रे लाल ॥
॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह
रियो निशिमांहि रे लाल ॥ उपतरीयें मंदिरपकी,
सेनारी वेर अथाह रे लाल ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥ गतन
प बहिननी प्रीतथी, आव्यो जई कनका कंठ रे लाल
॥ कोडी नवें पण रस दीये, दे विषमी प्रेमनी गंठ रे
लाल ॥ ज्ञा० ॥ १४॥ चोथे खंमें सुंदरू, थई सत्तावी
शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी
रधवल नूपाल रे लाल ॥ ज्ञा० ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर विस्मित होये, वीरधवल नूपाल ॥
पूछे इंम केवली प्रत्यें, थापी करतल जाल ॥ १ ॥
स्वयंवर मंमप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो
नहीं मलया प्रत्यें,तो हार दियो किम राच ॥२॥ हवे
कुमर कुमरी मनें,निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र
विचित्र ते, नांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मल
पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें नव वै
थी, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उप
कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आ
सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

काष्ट अंगारनें कारणेंजी, किणहीकें थापिया आण ॥ गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मल्या टा ण ॥ सां० ॥ ८ ॥ तेह कारें करी पाणिजी, आवरे साधुनें तेम ॥ चिहुंदिसें निरखतां साधुनुंजी,अंग दीसे नहीं जेम ॥ सां० ॥ ९ ॥ विंटतां साधुने काउंजी, आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ डुक्क संसारनेंजी, विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व नव वैरथी तेणीयेंजी, निर्दयायें महावीर ॥ अगनि लगाडीयो चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां०॥११॥ मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग सरणां त ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंम चोथे खरी खांतशुंजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी, साधशे साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि वरनें तन पाखतें,खातो धूमणिघेर ॥१॥ कोमल तनु रू पिरायनुं,बाले वन्हि तपंत ॥ मूलयकी कनका तणां,जा णे सुकृत दहंत ॥२॥ विकटोपद्रव पीडता,सहेतो श्री कृपियोध ॥ जागो निज आतम प्रत्यें,देवा इंम प्रतिबोध

महामंत्रीश्रीशमी॥ रागभैरवी॥ ताला नहीं नवै गए देती
॥ रे जीव ग्रोपर्नू दूर करि, ज्ञानिद्वारौं ध्याय
लै तार ॥ ज्ञानी आतमा ॥ दूरि मेरे परमा रूप मं
नार ॥ मेरे आतमा ॥ दूरे रागादिककी संग निवार
॥ मेरे आतमा ॥ ए आंकणी ॥ न्याय मिथ्या दे तर
न उपाय, मत चूके तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥
काल अनादिका भटक्या अनंत, अजुन न पाया न
वनल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आलका खेल,जो
फिरि न मिले ऐसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आ
ज नाव जिहाज, तर ले भवसागर बिन्ह पाज ॥ज्ञा०॥
भावमहा प्रवहनकीं फेर. ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर
॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल सनावें करिकें करार. ऐसें पा
ऐं भवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ दुःख पाय तें नरक निगोद,
करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा० ॥४॥ ता दुःख आ
गें या दुःख कौन, घटमें विचारिकें देखत कौन ॥
॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कछुय न दोष, मत कर ई
न उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
न आयु, आइ नई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहि
र तनकुं जारेंगी आगि, अभ्यंतर तन नहीं इन ला
गि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सजोग,

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीव सकलसौं वैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७॥ आप खमावें दोषरत्तीव, मोसौं खमहो सिगरे जीव ॥ ज्ञा० ॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, क्षपकावलीके चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकों प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्ल ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं जब उपयाही कर्म्म, नरम करैं तिनुमैं तजी नर्म्म ॥ ज्ञा०॥ अंतगड केवली व्है के साथ, पायो मुगतिपद भयो है अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, भवकौं जलां जलि दै निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंडमें राग बंगाल, चोतीसमी पूरी भइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहु खेल,समतासौं भयो कर्म उखेल ॥ज्ञा०॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुव जिन्हारें तेथ ॥ नावी कनका पापिणी, बीहिती केष अनेय ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी,विधि विरची विष सींची ॥ मारे अजवें अपरनें, तस रस सरस खींचि ॥ २॥ मति जेहनी पग हेवले, बाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करतो तेहनें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु हणतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ जाण्यो आगम मां इस्यो, तिर्थंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ नृप हुई एहने क, मैयो, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां,थ ए कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवर्यो, अवनीपति सविलास रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विलु द्धो रे ॥ जनक वदन जोवा नणी, उत्कंवित मन सु धो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आमंवरें, काननमां जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म मय वायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयायकी, महीपति दुःखमांहें नडियो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे नोल व्यो, धसकें धरा तल पडियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें नाख्यो रे राजवी,मूर्छाणो मन कणो रे ॥ सजग हुउं उ पचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प रिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रें आंसुयें, करता पट अनिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नृपति नणे रे पापीये, किणे ए

धुं अकाजो रे ॥ निर्नय निःकारण वैरीयें, उपतर्यों मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ नवभ्रमणथी रे इर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहतुं वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण डुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ०॥ ए॥ मीठ तुमारी रे रस नरी, न पडी माहरे अंगे रे ॥ वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, वेशी क्षण एक रंगे रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी ग्रांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउ मुज जेतो रे ॥ इंण वेला मुज पापथी, थयो डुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रे॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांई न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी,एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लहुं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूर्यो रे जनकनें, विलपे इंम नृपाजो रे ॥ कांतें चोया रे खंमनी,कही पणती समी ढाजो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरित लोचन आसुर्वे, वेशाकुल नृपाल ॥ निज न
दनें ईम आदिसे, करि नृकुटीनो चाल ॥१॥ पग अनु
सारें निरखतां, करो शीघ्र परगट ॥ जिम पापीनें पाप
फल, आवे उदय विकट ॥२॥ आप हृदय गाणे तथ्यों,
बीजो दुष्ट परिणाम ॥ दुःप्रपंच रस सींचतां, कर्युं क
टक विराम ॥३॥ मुनि हिंसा शाखाशतें,पाम्यो अति
विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो विहुं पल
नार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अनिमुख हूउं स
मक्ष ॥ हिंसफनें फलशे हवे,पोप्यो पातक वृक्ष ॥५॥
॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लावनदे मात मलार ॥ ए देशी ॥
॥ वचन सुणी ततकाल,कलया नड मगराल,आज
हो डेरा रे जण रुगा जाणे काननाजी ॥ १ ॥ जोतां
त व्रत नूम, मांहे सबली धूम,आज हो धारे रे अ
॥रे ध्यान तेहनेंजी ॥२॥ पुर बाहिर एक देश,पेखत
निवेश, आज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाड
॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनीत, श्याम वसन
आज हो वेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी
॥ ४ ॥ साही केश,काढी बाहिर देश, आज हो
कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नृपें ताडी

जोर, पाडंतो मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शुं ते कारण वेरनुंजी ॥६॥ हणिउं तें महाजाग, मुनिवरनें इंणे जाग, आज हो लाखें रे तुज पाखें न करे काइ स्युंजी ॥७॥ हणी घणी जूपाल, सींची तरुनी माल, आज हो नांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥८॥ रूठो जूप तिवार, नाना विध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥९॥ आप चरितने यो ग, पामी फलनो जोग, आज हो ठठी रे दुःख पूठी न रकें कपनीजी ॥१०॥ नरक तणा संताप, सहेशे अ ति दुःख आप, आज हो वकें रे नवचकें जमशे वापडी जी ॥ ११ ॥ चोथे खंमें रसाल, बत्रीशमी एह ढाल, आज हो कांतें रे जलि जांतें जांखी शास्त्रथीजी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ जूमिपाल निज तातनो, शोक अतीव करंत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण क्षण नवि ठांकंत ॥१॥ जाणी तेहवुं तातनुं, दुस्सह मरण विराम ॥ पडियो [illegible], जूप सहस्रवल ताम ॥ २ ॥ शतवल [illegible]तवल विन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण [illegible] तणी परें, तपे अरतिनें जार ॥ ॥३॥ कृष्णदेव [illegible]लिजइनें, द्वारावतीनें दाह ॥ शोक हुउ पितृनो जि

स्यो, तिस्यो हुउं इहां प्रोह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजाढी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ए देशी॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज,महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्मे नवि पडि बोहे हो राज ॥म०॥१॥ एकादश अंगनी जाण,पामी शुन अवधिनाण ॥ नावंतो थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज०॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, नवताप झुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा,होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज०॥४॥ साधुयोग्य वसतीनें ठामें, पशु पंमग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अभिरामें, रिटी रही आइ सुकामें हो राज० ॥५॥ शतबल नृपति अति नकें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजाया साध्वी उगतें,जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज० ॥६॥ राजेंइ पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो,पाम्यो शिवसुखमह

मूरो हो राज० ॥७॥ उपसर्गों कनकवतीयें, न कर्युं मन कलुप व्रतीयें ॥ नवसागर तरतां तीयें,अवलंबन दीधुं त्रीयें हो राज० ॥८॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज० ॥ ए ॥ सेवें जे गि रि वन घाटां, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आंटा, खमीयें थई धीरजना सांटा हो राज० ॥ १० ॥ कुलन ते पद तातें लाधुं, नीगमीयुं नवनय बाधुं ॥ स्वे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुप ए आधुं हो राज० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुउं मुनिराय, तिणें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इंणे ठाय हो राज० ॥ १२ ॥ पोता नो वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शो क के हर्षज होई,कहे हियडे विचारी जोई हो राज०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानर पीडा तातें, सांलही होशे एह वा तें ॥ चिंता म करे तिलमातें,जय अरथो खिति सहे गातें हो राज० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहे लुं तिहां दुःख सहे बाधें ॥ निज कारज सिद्धि आ पे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज० ॥१५॥ पहेलुं दुःख सघले दीसे, पाछें सुख संनव हीसे ॥ ई

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाणे शोकमां कीसें हो राज० ॥ १६ ॥ नेहथा नहीं धरण पितानां, मत क र ईम नहि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तु ज नकिना गुण नहीं ठाना हो राज०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो जावि सरूप ॥ हढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज० ॥ १८ ॥ डुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुहार ॥ ज खमी जिम बीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज० ॥ १९ ॥ तुज सरिखा जो ईम करशे,शोका कुल हियडुं नरशे ॥ वापडलो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज० ॥२०॥ ईम धर्म तणो उपदेश,निसुणी प्रतिबूऊयो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक क लेश. संवेग लह्यो सुविशेष हो राज० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नपाल,महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥ साड त्रीशमी ए कही ढाल,चोथें खंम कांति रसाल होराज०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी. धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शत यल मुनि निर्वृतिथलें, मांमयो नवल प्रासाद ॥ ता त तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २

अनुक्रमेंजी, कपजशे शुनगाय ॥गु०॥१५॥ बोधिनाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पडिवजीजी,लेहेशे सुगति सुखहेवि ॥गु०॥१६॥ ढाल कही अडत्रीशमीजी,चोथा खंमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी,पामी नवतणो छेह ॥गु०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ तेमाटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानाभ्यास ॥ इहिजम संकट उद्धरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥२॥ संकटमां पण पालजोखुं,जिम मलयायें शील ॥ तिम वली बीजो पाल शे, ते लेहेशे शिवलील ॥३॥ महाबलें जिम सांसह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो,ले देशे ते अपवर्ग ॥४॥ जिम प्रथम व्रत आदर्‌यां, दंप तीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम नावथी, बीजे पण सुप वित्त ॥५॥ कीधी मुनि आशातना,दंपतीयें धुर जेम ॥ डुस्क हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोइ तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीठो दीठो रे ॥ वामाजीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ नावें नावें रे नवि करजो ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञानें

,कोडि पलाये, ज्ञानें कुमति न वाधे ॥ ज्ञानें ह
जहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क
ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां,
हेतु जिन भांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु,
ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा नि
दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य
सगुणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥
एकनो भाव विचारी, तेह लही भवपार ॥ ते
शिवसाधन साधुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न०
शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥
चरित भांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें
० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय
सूरिंदें ॥ नूतन मलयचरित्र संक्षेपें, भांख्युं
नंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति
ण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संबं
धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीत
गनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रभ सूरि ॥ गुण
ाम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न०
स शिष्य कोविदकुल मंडन, प्रेमविजय बु
कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध